धौलाधार संदेश

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय का मुख्य संवाद-पत्र

त्रैमासिक | अंक : 8 | जनवरी-मई 2024 **दीक्षांत विशेषांक** पृष्ठ : 16

राष्ट्रपति ने 7वें दीक्षांत समारोह में छात्रों को बाँटी डिग्रियाँ

- **अनुसंधान कार्य को 'मेक इन इंडिया' और 'स्टार्ट अप' कार्यक्रमों के साथ जोड़ने का किया आह्वान**
- **परम्परागत शिक्षा प्रणाली पर दिया जोर**

दीक्षांत समारोह में माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की गरिमामयी उपस्थिति (मध्य में), कुलपति प्रो. एस. पी. बंसल, हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल और कुलाधिपति (बाएँ से दाएँ)। फोटो: धौलाधार संदेश

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय का सातवाँ दीक्षांत समारोह 6 मई को राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला के सभागार में हुआ। इस दौरान मुख्य अतिथि माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने पीएचडी, स्नातकोत्तर और स्नातक के मेधावियों को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया। दीक्षांत समारोह में कुल 709 विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की गयी। दीक्षांत समारोह में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल, कुलाधिपति प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी (पद्मश्री से सम्मानित), कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, परीक्षा नियंत्रक प्रो. ए. के. महाजन, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील कुमार ठाकुर एवं विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने पदक/डिग्री प्राप्त करने एवं सम्मानित होने वाले शोधार्थियों-विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए उन्होंने उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रगतिशील और नवोन्मेषी अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने का आह्वान किया जो देश के 'मेक इन इंडिया' और 'स्टार्ट अप' कार्यक्रमों के उद्देश्यों के अनुरूप हों।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कर्मियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह उनके निरंतर प्रयासों और दूरदर्शिता का परिणाम है । उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपनी शैक्षणिक यात्रा में नैक ए+ ग्रेडिंग हासिल करके अभूतपूर्व सफलता हासिल की है और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ परस्पर सहयोग बढ़ाकर शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है।

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि "आज का दीक्षांत समारोह इस बात का प्रतीक है कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में दृढ़ता से प्रगति कर रहा है, और पाठ्यक्रम ढाँचे, शिक्षण-अधिगम और अनुसंधान कार्य में छात्रों के बीच नई ऊर्जा का संचार कर रहा है।" मेक इन इंडिया जैसे महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के माध्यम से दुनिया को नई तकनीकों का प्रदर्शन करके नए भारत ने कैसे तकनीकी प्रगति की है, इस पर विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने विश्वविद्यालय की सराहना की । उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अन्य विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापनों और अंतरराष्ट्रीय समझौतों पर हस्ताक्षर करके इस विचार के साथ तालमेल बनाए रखा है, जो वैश्विक सहयोग का मार्ग प्रशस्त करेगा।

709 विद्यार्थियों को मिलीं डिग्रियाँ

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के 2019-22 के स्नातक और 2020-22 सत्र के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों को डिग्रियाँ प्रदान की गयीं। इस तरह कुल 709 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक और डिग्रियाँ प्रदान की गईं । वहीं 11 पीएचडी, 6 एमफ़िल, 25 पीजी और 5 यूजी के मेधावियों को गोल्ड मेडल से नवाजा गया।

"मुझे आशा है कि आप सभी अपने प्रयासों से इस संस्थान को अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे और इस विश्वविद्यालय के साथ-साथ राष्ट्र के विकास में प्रभावी योगदान देंगे।"

- द्रौपदी मुर्मु, माननीय राष्ट्रपति

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल को डॉक्टरेट की मानद उपाधि

राज्यपाल को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान करती हुईं माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु।

माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 6 मई को हिप्रकेवि के 7वें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुईं। दीक्षांत समारोह में अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का प्रदेशवासियों की ओर से हिमाचल पधारने पर स्वागत किया। वहीं माननीय राष्ट्रपति ने राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की।

दीक्षांत समारोह में अब तक भारत के तीन राष्ट्रपति कर चुके हैं मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत

दीप प्रज्ज्वलित कर दीक्षांत समारोह का शुभारम्भ करती हुईं माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के 7वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होना उनके लिए बेहद गर्व की बात है। वे राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद के बाद विश्वविद्यालय के समारोह की शोभा बढ़ाने वाली तीसरी राष्ट्रपति हैं, जो क्रमश: 2014 और 2022 में मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए थे।

प्रदेश में सांस्कृतिक इतिहास की अनंत संभावनाएँ –राज्यपाल

दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में देश भर के इतिहासकारों ने किया मंथन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश सांस्कृतिक इतिहास की अनंत सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। आवश्यकता केवल व्यवस्थित अनुसन्धान कर उसे दुनिया के सामने लाने की है। यह बात हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग व भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली की ओर से प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए कही। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के धार्मिक स्थान आज भी अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से न केवल समृद्ध सांस्कृतिक विरासत समेटे हुए हैं बल्कि इनमें जीवंत इतिहास भी छिपा हुआ है। इसलिए इस पर बहुत काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने उपस्थित इतिहासविदों का आह्वान करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में इस बात का गहन चिंतन-मनन होना चाहिए कि कैसे इतिहास, लोक संस्कृति, ऐतिहासिक पुरावशेष का भंडार कहे जाने वाले हिमाचल प्रदेश में शोध व निरन्तर अध्ययन के माध्यम से इसके सांस्कृतिक इतिहास को फिर से लिख कर प्रदेश को समृद्ध किया जा सकता है। 'बृहत् हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास' विषय पर बोलते हुए मुख्य वक्ता डॉ. बाल मुकुंद पाण्डेय ने कहा कि अब स्थितियाँ बदल गई हैं। अब महाराणा प्रताप,

शिवाजी, अहोम राजाओं सहित उन गौरवशाली राजाओं और घटनाओं का इतिहास पढ़ाया जा रहा है जो भारत के गौरवशाली अतीत का स्मरण करवाएंगे। वहीं केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए बताया कि राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय को लगातार उपलब्धियाँ मिल रही हैं। बिना आवेदन किए ही विश्वविद्यालय को भारत सरकार द्वारा स्वायत्त विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाना, एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मौके पर इतिहास की सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो. सुष्मिता पाण्डेय व अन्य विद्वानों ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल व अन्य द्वारा विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के न्यूज़ लेटर, कविताओं पर आधारित पुस्तक, डॉ. प्रिया के काव्य संग्रह व विश्वविद्यालय के शोधार्थी भरत सिंह द्वारा रचित हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति पर आधारित पुस्तक नुआला का विमोचन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता शैक्षणिक प्रो. प्रदीप कुमार, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, जिला उपायुक्त, जिला पुलिस अधीक्षक व समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

विवि के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

धर्मशाला। इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला और अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संयुक्त तत्वावधान में तथा भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में बोलते हुए मुख्य वक्ता और अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बाल मुकुंद पाण्डेय ने कहा कि इतिहास का निर्माण हमारी गौरवशाली परम्पराओं व संस्कृतियों की शानदार उपलब्धियों से होता है। साथ ही इसका सतत संरक्षण और संवर्धन भी इतिहास को महान बनाने का कार्य करता है। उन्होंने यह भी कहा कि जो समाज अपने इतिहास से जुड़ा रहता है उसके लिए खुला आकाश उपलब्ध होता है जहाँ नव सृजन की अपार संभावनाएँ उपस्थित होती हैं। मौके पर बोलते हुए विवि के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि दो दिनों तक चलने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश भर के विद्वानों ने बड़े ही परिश्रम पूर्ण तरीके से कार्य करते हुए यह निर्धारित कर दिया है कि किसी भी समाज और राष्ट्र का आधार उसका इतिहास ही होता है। इसलिए इतिहास का संरक्षण और उसमे संशोधन समय-समय पर होते रहना चाहिए अन्यथा उसमें विकार पैदा हो जाते हैं। प्रो. बंसल ने यह जानकारी भी दी कि उनके विश्वविद्यालय ने इतिहास के विभिन्न आयामों को लेकर अनेक पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए हैं जिनके सुपरिणाम सामने आ रहे हैं। संगोष्ठी संयोजक डॉ. जगदीश प्रसाद ने संगोष्ठी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि दो दिनों तक चलने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में चार तकनीकी सत्रों के साथ एक पैनल डिस्कशन का भी आयोजन किया गया जिसमें देश भर से पहुँचे विद्वानों, शिक्षकों, शोधर्थियों ने संगोष्ठी के मुख्य विषय 'बृहत् हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास' के विभिन्न पक्षों को लेकर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में 76 शोध सारांश तथा शोध-पत्र आए तथा 176 से भी ज्यादा प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में प्रो. नारायण सिंह राव, प्रो. कंवर चंद्रदीप सिंह, डॉ. राजकुमार, डॉ. उदयभान, डॉ. राजीव कुमार, डॉ. राघवेंद्र सिंह यादव आदि इतिहासकार उपस्थित थे।

CUHP to Sign MoU with Gandaki University Pokhara, Nepal

Dharamshala. The Central University of Himachal Pradesh will have an academic exchange with Gandaki University (GU) Pokhara, Nepal. In this regard, both the universities have signed an MoU. Through this MoU, the interdisciplinary options and student-centric academic approach will help students achieve their goals and dreams. Vice Chancellor of the Central University, Prof. Sat Parkash Bansal was invited to the university on behalf of Gandaki University (GU), Pokhara. On this occasion, Vice Chancellor Prof. Bansal interacted with the students of Gandaki University and informed them about the various courses being run at the CUHP. The Vice Chancellor visited Gandaki University (GU) Pokhara, situated in the lap of majestic Fishtail and Annapurna Mountains and in the valley of lakes. On this occasion he met the Chancellor of Gandaki University (GU), Pokhara, Prof. Ganesh Man Gurung, Vice-Chancellor Prof. Naba Raj Devkota, Registrar Kailash Timilsina. During this visit, detailed discussions took place between the representatives of two universities on various academic issues.

Vice Chancellor of Central University, Prof. Bansal informed that Central University of Himachal Pradesh will have educational exchange with Nepal under joint auspices in the coming time, for which Gandaki University (GU) Pokhara is going to sign an MoU with Central University of Himachal Pradesh. Gandaki University is designed to be a leading national center for excellence in higher education in Nepal, aspiring to rank among the world's top universities. Also, Gandaki University provides an optimal venue for teaching and research to meet the growing demands of the global context It is noteworthy that the Central University of Himachal Pradesh is also establishing new dimensions in every field. It has been evidenced by the recent accreditation of the university by NAAC with A+ grade. Through such MoUs, the university can also strengthen international partnerships.

Vision of MoU

Prof. Bansal enthusiastically underscored the fact that this MoU will have a lasting and enduring impact on the development of human resource potential of Nepal and India, especially in science and technology as well as information technology and management sciences. Prof. Sat Parkash Bansal said that through this MoU, student teacher exchange program can also be run smoothly so that students and teachers of both the countries can establish many new dimensions in the educational environment which will be beneficial in the future. It will play a vital role in strengthening the education and understanding the culture of both the countries.

Immense opportunities for international students in India: Prof. S.P. Bansal

More than 150 universities from India and Nepal participate in the three-day conference

Dharamshala Association of Indian Universities, in collaboration with Kathmandu University, is organizing the “India-Nepal Higher Education Summit” from 15 to 17 February in Dhulikhel, Nepal. The summit, organized in conjunction with the AIU Northern Region Vice-Chancellors' Conference on 'Globalization and Internationalization of Higher Education', is being attended by over 150 universities from India and Nepal. Vice Chancellor Prof. Sat Prakash Bansal, Registrar Prof. Suman Sharma and Dean Academics Prof. Pardeep Kumar are participating in this conference on behalf of Central University of Himachal Pradesh. This conference started on 15 February and Nepal's Prime Minister Pushpa Kamal Dahal 'Prachanda' inaugurated it. Vice Chancellor of Central University, Prof. Bansal greeted the Prime Minister by presenting him Kullu cap and muffler as per the tradition of Himachal. On the second day of the conference, Vice Chancellor of Central University, Prof. Bansal chaired the technical session on “Student Mobility and Diversity: Enhancing International Exposure”. He underlined the importance of international exposure in the light of student mobility. In this highly informative session, he underlined various points through a presentation. These include the current status of higher education, the basis of India's education system, quality education, excellence in academics and research, innovation-based teaching methods, integration of students from diverse cultural backgrounds, availability of cultural harmony and integration, availability of new advanced

Rare Feat, But Still a Long Way to Go

Nothing can be more rewarding for an institution than the acknowledgment and praise from top dignitaries for its achievements and endeavors. So, when, the Honourable President Draupadi Murmu, praised the Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, for its accomplishments and progress in a short span, it was a moment of great pride for the faculty, students, and everyone associated with the institution. The President attended the seventh convocation as the chief guest to honour the students and scholars who had successfully completed their courses and research work. They are now embarking on new journeys, pursuing careers in their respective fields. What made the event more special was that this was the third time the President of India graced the occasion as the chief guest of the convocation. Before her, Presidents Pranab Mukherjee and Ram Nath Kovind attended the event in 2014 and 2022, respectively. President Murmu's inspiring words, exhorting students to do their best in contributing to the development of the University and the nation, and her compliments to VC Prof. Sat Parkash Bansal, gave a significant morale boost to the students and staff.

They have worked relentlessly over the last decade. The appreciation has rejuvenated their spirit and strengthened their resolve to set higher goals for success. In a short span, the University has made its mark and become one of the leading institutions in the country, thanks to a dedicated team led by Vice Chancellor Prof. Sat Parkash Bansal and his predecessors. Despite constraints in terms of infrastructure, the University has secured an A+ grade in the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) grading, been awarded autonomy by the University Grants Commission (UGC), and adopted the National Education Policy through a student-friendly curriculum. Even the absence of its own permanent campus has not deterred the Central University from setting high standards in academics, sports, and co-curricular activities. The University has achieved an exemplary feat by organizing national-level sports events in the last three years, including the 'All India Women Weightlifting Competition' in collaboration with the All India University Association. However, this may well be just the beginning.

Given the vision of the Vice Chancellor Prof. Sat Parkash Bansal and the aspirations of students who have come from across the country to study and carve a niche for themselves here in the lap of Dhauladhars, we all need to realize that we still have a long way to go. He envisions the University as a center of Indian consciousness in knowledge, science, and philosophy with a distinct identity. Prof. Bansal articulated this during the convocation, reiterating the resolve and exhorting students to become self-reliant and build a strong society by creating a self-reliant India through a skilled employment-oriented environment.

To achieve this, there is a need for collective and sustained efforts. We must realize that despite accomplishments and praises, we have miles to go before we realize the dream of "Ek Bharat Shreshtha Bharat, Vikasit Bharat, Atam Nirbhar Bharat."

Prof. Aditya Kant

फसल रोग प्रबंधन के निदान के लिए व्याख्यान का आयोजन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के रसायन एवं रासायनिक विज्ञान विभाग के प्रफुल्ल चंद्र रे क्लब की ओर से "DISEASE MANAGEMENT IN CROP PLANTS: CHALLENGES AND FUTURE PERSPECTIVES" पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान के अतिथि वक्ता डॉ. सचिन उपमन्यु, विभागाध्यक्ष, पादप विज्ञान विभाग, हिप्रकेवि ने फसल पौधों में रोग प्रबंधन और चुनौतियों की अवधारणा के बारे में बताया।

डॉ. सचिन ने फसल पौधों, रोग प्रबंधन और संबंधित क्षेत्रों के भविष्य के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने पादप रोग प्रबंधन की प्रमुख चुनौतियों और उन क्षेत्रों के बारे में बात की जहाँ शिक्षाविदों को एक स्थिर समाज के लिए खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने में मदद करनी चाहिए, साथ ही साथ संबंधित पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य की रक्षा करना और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता को कम करना चाहिए। रसायन एवं रासायनिक विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक शील ने डॉ. सचिन उपमन्यु को उनके व्याख्यान के लिए धन्यवाद दिया। इस व्याख्यान में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, शाहपुर परिसर के रसायन एवं रासायनिक विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक शील के साथ अन्य संकाय सदस्य डॉ. नीरज गुप्ता, डॉ. मनीष कुमार, डॉ. प्रमोद कुमार और डॉ. शिवानी बेरी, शोधार्थी और स्नातकोत्तर विद्यार्थी उपस्थित थे।

'रिज़्यूमे लेखन' के बारे में विद्यार्थियों को किया जागरूक

सीयू के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ की ओर से वेबिनार आयोजित

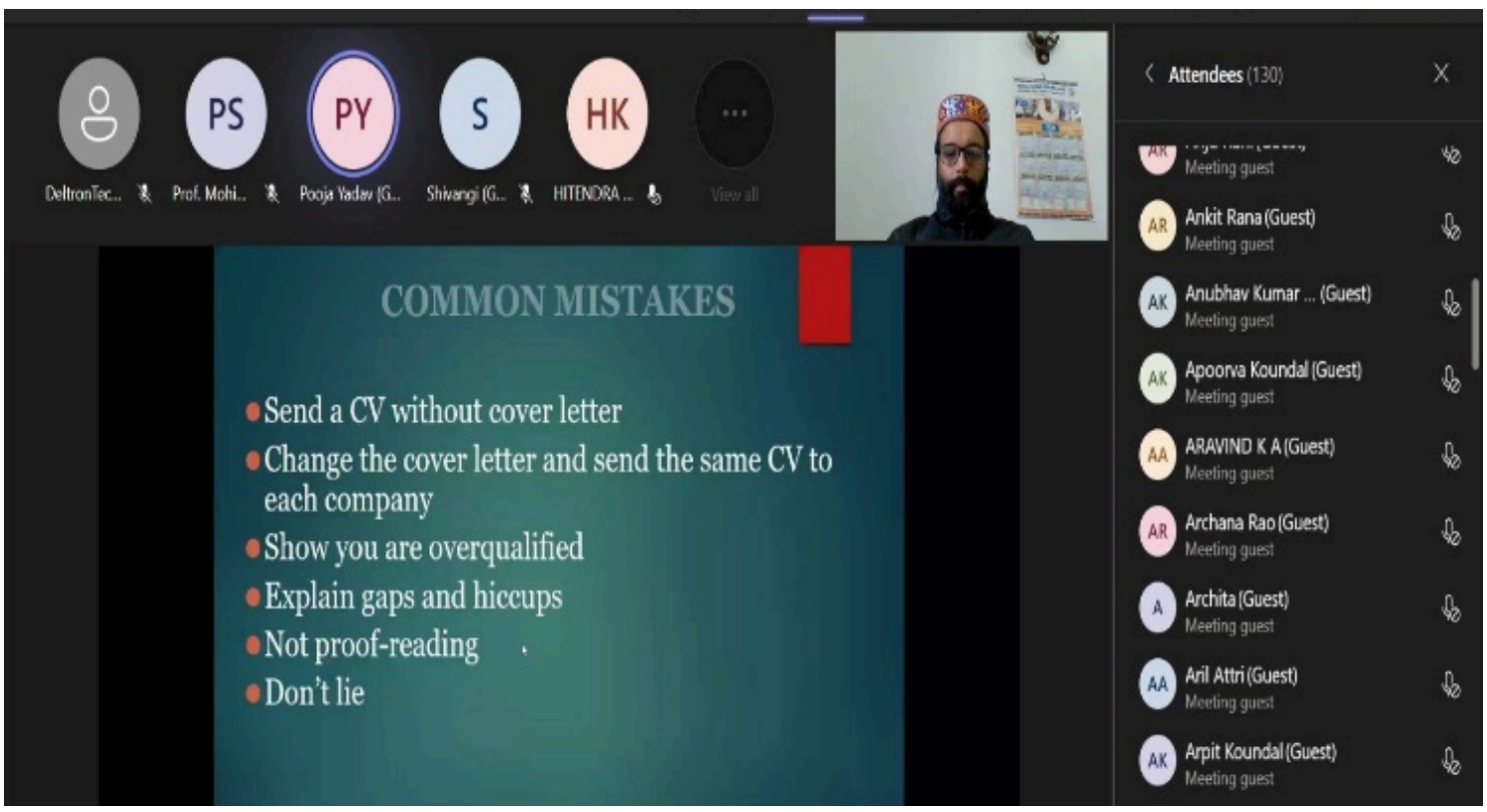

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ की ओर से डेलट्रॉन टेक्नोलॉजीज, नोएडा के सहयोग से 'रिज़्यूमे लेखन' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में तीनों परिसरों से अंतिम सेमेस्टर के 170 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रकोष्ठ के निदेशक, प्रो. मोहिंदर सिंह ने स्वागत भाषण में विश्वविद्यालय का परिचय दिया तथा प्रकोष्ठ की भूमिका पर चर्चा की। वेबिनार में ट्रांसवेन कंसल्टिंग में मानव संसाधन विभाग के वी.पी. सुश्री पूजा यादव ने विशषज्ञ के रूप में विषय पर चर्चा की। उन्होंने रिज़्यूमे लेखन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने अभ्यर्थियों द्वारा उनके रिज़्यूमे में की जाने वाली सामान्य गलतियों पर भी चर्चा की।

उन्होंने "रिज़्यूमे और सीवी" के विभिन्न प्रारूपों को साझा किया। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ इस सत्र में प्रत्यक्ष एवं आभासीय माध्यम से विद्यार्थियों के प्रशिक्षण हेतु इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करेगा। वेबिनार में प्रकोष्ठ के उप-निदेशक डॉ. प्रदीप चौकसे तथा दोनों सहायक निदेशक डॉ. मनीष एवं डॉ. दिग्विजय फुकन उपस्थित रहे।

कुलपति ने किया गोवा स्थित एनआईडब्ल्यूएस परिसर का दौरा

विश्वविद्यालय में जलक्रीड़ा से संबंधित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन पर की चर्चा

धर्मशाला। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत छात्र जुड़ाव और पाठ्येतर गतिविधियों के आयाम का विस्तार करने के प्रयास में, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. पी. बंसल ने हाल ही में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वॉटरस्पोर्ट्स (एनआईडब्ल्यूएस)-आईआईटीटीएम गोवा परिसर का दौरा किया। उनकी यात्रा का उद्देश्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु एक व्यापक वॉटरस्पोर्ट्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर चर्चा करना था।

एनआईडब्ल्यूएस परिसर में आयोजित बैठक में दोनों संस्थानों के अकादमिक और प्रशासनिक प्रतिनिधि उपस्थित थे । कुलपति प्रो. एस.पी. बंसल ने समग्र छात्र अनुभव को समृद्ध करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम की क्षमता के प्रति उत्साह व्यक्त किया। चर्चा के दौरान, प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ, नोडल अधिकारी एनआईडब्ल्यूएस, गोवा ने प्रस्तावित कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। इसमें पेश की जाने वाली जलक्रीड़ा गतिविधियों के प्रकार, लागू किए जाने वाले सुरक्षा उपाय, छात्रों हेतु प्रशिक्षण आवश्यकताएँ और ऐसे आयोजनों के तार्किक विवरण शामिल थे।

कुलपति प्रो. एस. पी. बंसल ने समग्र शिक्षा के महत्व और एक सर्वांगीण शैक्षणिक अनुभव को बढ़ावा देने में पाठ्येतर गतिविधियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वाटरस्पोर्ट्स ओरिएंटेशन प्रोग्राम जैसी पहल न केवल छात्रों को मूल्यवान कौशल प्रदान करती है बल्कि शारीरिक सौष्ठव और टीम वर्क को भी बढ़ावा देती है। एनआईडब्ल्यूएस के अधिकारियों ने भी इस कार्यक्रम को साकार करने में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को सहयोग प्रदान करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने अपनी अत्याधुनिक सुविधाओं और अनुभवी कर्मचारियों को मूल्यवान संसाधन बताया, जो इस पहल की सफलता में योगदान देंगे। विश्वविद्यालय के छात्र कायाकिंग, कैनोइंग, विंडसर्फिंग और नौकायन सहित वाटरस्पोर्ट्स गतिविधियों की एक रोमांचक श्रृंखला का अनुभव ले सकते हैं।

कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल छात्रों को इन रोमांचक गतिविधियों से परिचित कराना है बल्कि उनमें अनुशासन, खेल कौशल और रोमांच की भावना पैदा करना भी है। उन्होंने कहा कि वाटरस्पोर्ट्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम की योजनाएँ आकार ले रही हैं और इस संदर्भ में दोनों संस्थान इसके सुचारू कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। दोनों संस्थान इसे लेकर एक एमओयू पर हस्ताक्षर करने की योजना बना रहे हैं। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और एनआईडब्ल्यूएस के बीच यह सहयोगात्मक प्रयास पारंपरिक कक्षा शिक्षण से परे शैक्षिक परिदृश्य को व्यापक बनाने की दिशा में एक प्रगतिशील कदम का प्रतीक है। यह छात्रों को व्यक्तिगत विकास और कौशल विकास के लिए विविध अवसर प्रदान करने की साझा दृष्टि को दर्शाता है।

हिमाचल-झारखंड में जनजातियों के मंदिरों, वास्तुकला, रीति-रिवाजों पर होगा शोध कार्य

केंद्रीय विश्वविद्यालय और सभ्यता अध्ययन केंद्र दिल्ली के बीच एमओयू

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला और सभ्यता अध्ययन केंद्र दिल्ली ने शोध, अकादमिक और विस्तार गतिविधियों में सहयोग एवं संसाधनों को साझा करने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौता ज्ञापन पर सीयू के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, जनजातीय अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मलकीत सिंह, सभ्यता अध्ययन केंद्र दिल्ली के निदेशक रवि शंकर और सभ्यता अध्ययन केंद्र दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. धर्मवीर शर्मा ने हस्ताक्षर किए। विवि के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने इस समझौता ज्ञापन पर हर्ष जताया और कहा कि इसके माध्यम से जनजातीय विषयों पर शोध को तेजी से आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

इस समझौता ज्ञापन से दोनों संस्थानों की विशेषज्ञता और संसाधनों का आदान-प्रदान किया जा सकेगा। हिमाचल प्रदेश, झारखंड और इसके आसपास के क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों के अपने मंदिर हैं। वनवासी समाज के लोग ही इनके पुजारी हैं। यहाँ के मंदिरों, इनकी वास्तुकला और रीति-रिवाजों को समझने के लिए एक विशेष परियोजना के तहत मिलकर शोध कार्य किया जाएगा। इससे यह समझने की दृष्टि मिलेगी कि वनवासी समाज प्रकृतिपूजक ही नहीं, बल्कि शक्तिपूजक भी रहा है। इसे केवल प्रकृतिपूजक बताकर समूचे जनजातीय समाज की आधी-अधूरी और भ्रामक व्याख्या की जाती रही है। शोध के दौरान कई नए एवं महत्वपूर्ण तथ्य भी निकलकर सामने आएंगे, जो जनजातीय समाज की पहचान को सशक्त बनाने में मददगार होंगे।

समझौता ज्ञापन के तहत दोनों संस्थानों में जनजातीय विषयों पर शोध और प्रकाशन के क्षेत्र में सहयोग मिलेगा। शोधार्थी और शिक्षक पुस्तकालयों में उपलब्ध किताबों का उपयोग कर सकेंगे। जनजातीय क्षेत्र में नीति-निर्माण की दिशा में भी यह समझौता ज्ञापन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इसी समझौता ज्ञापन के अन्तर्गत विद्यार्थी एवं शिक्षक विकास से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकेगा। गौरतलब है कि सभ्यता अध्ययन केंद्र की स्थापना 30 अप्रैल, 2015 को दिल्ली में एक पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के रूप में की गई थी। इसके संस्थापक ट्रस्टी रवि शंकर, सुबोध कुमार और प्रवीण शुक्ला हैं। अपनी स्थापना के समय से सभ्यता अध्ययन केंद्र युवा शोधार्थियों से निरन्तर संपर्क कर जोड़ने तथा उन्हें विभिन्न विषयों पर शोध हेतु प्रेरित करने, उन विषयों पर शोध-निष्कर्षों से आमजन को अवगत कराने हेतु संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ आदि आयोजित करने जैसी गतिविधियों में निरंतर संलग्न है। शोध कार्यों को करने के लिए केंद्र के पास युवा शोधार्थियों का एक अच्छा समूह है। इस समूह में राजनीतिक-सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद, प्रशासनिक अधिकारी तथा जीवन के विभिन्न आयामों से जुड़े युवा शामिल हैं।

मातृभाषा से ही हो सकती है विचारों की अभिव्यक्ति
सीयू में अंतर्राष्ट्रीय मातृ-भाषा को समर्पित व्याख्यान आयोजित

धर्मशाला। पंजाब साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ के सहयोग से हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) के पंजाबी और डोगरी विभाग की ओर से अंतरराष्ट्रीय मातृ-भाषा दिवस के उपलक्ष्य में 'जीवन में मातृभाषा का महत्व' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने अंतरराष्ट्रीय मातृ-भाषा दिवस को समर्पित विशेष भाषण आयोजित करने के लिए पंजाबी एवं डोगरी विभाग को बधाई दी।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और माँ सरस्वती की आराधना से हुई। इसके साथ ही कार्यक्रम के अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले आतिथियों, विभिन्न विभागों के शिक्षकों, छात्रों और शोधार्थीयों का स्वागत पंजाबी और डोगरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बृहस्पति मिश्र के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डा. कमलजीत सिंह (अध्यक्ष, पंजाबी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली) ने भाग लिया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की ऐतिहासिक प्रासंगिकता पर विचार करते हुए वर्तमान के जीवन व्यवहार में मातृभाषा के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि जीवन में मातृभाषा से ही सर्वांगीण विकास हो सकता है। मातृभाषा के माध्यम से मनुष्य अपनी भावनाओं और विचारों को अधिक स्पष्टता से व्यक्त कर सकता है और मातृभाषा में ही प्रभावी बातचीत हो सकती है। रिश्तों में ताजगी बनाए रखने का एकमात्र माध्यम मातृ-भाषा ही है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा बोलने या बताने में झिझकता है तो वह अपने जीवन में सफलता के साधन खो देता है। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. सुमन शर्मा (कुलसचिव, हि. प्र. के. वि. धर्मशाला) शामिल हुए। उन्होंने मातृभाषा पर यह आयोजन करने के लिए पंजाबी विभाग को बधाई देते हुए कहा कि पूरे भाषा संकाय को मातृ-भाषाओं के महत्व पर एक बड़ा सेमिनार आयोजित करना चाहिए ताकि विद्यार्थी अपनी मातृ-भाषाओं का प्रचार-प्रसार कर सकें और उनमें मातृ-भाषा के प्रति रुचि पैदा हो सके। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रोशन लाल शर्मा (डीन, भाषाएँ, हि. प्र. के. वि. धर्मशाला) ने किया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मातृ-भाषा किसी भी भाषा बोलने वालों के लिए शब्दों का खजाना होती है, जो जीवन भर उसका साथ निभाती है। जो व्यक्ति जितनी अधिक भाषाएँ जानता है, वह उतना ही अधिक ज्ञानी होता है। उन्होंने कहा कि एक से अधिक भाषाएं सीखी जा सकती हैं लेकिन मातृ-भाषा को सीखने के लिए कोई विशेष यतन करने की जरूरत नहीं होती बल्कि वह उसके परिवार से अपने-आप उसके व्यवहार का अंग बन जाती है। उन्होंने कुलसचिव को आश्वासन दिलाया कि जल्द ही भाषा संकाय की ओर से मातृ-भाषाओं से संबंधित एक बड़ा सेमिनार आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में भारी संख्या में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शोधार्थीयों ने भाग लिया। कार्यक्रम में शामिल आतिथिजनों, विभिन्न विभागों से आए शिक्षकों, शोधार्थीयों और छात्रों का धन्यवाद डा. नरेश कुमार ने किया। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. हरजिंदर सिंह और सह-संयोजक डा. गट्टूलाल पाटीदार भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सीयू में “सुकन्या समृधि योजना” के प्रचार-प्रसार हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला
कुलपति प्रो. बंसल ने की अध्यक्षता, केंद्र सरकार की योजना को सराहा

धर्मशाला। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के संयुक्त तत्वावधान में “सुकन्या समृधि योजना” के प्रचार-प्रसार हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। धौलाधार परिसर एक के सेमिनार हाल में हुई इस कार्यशाला में बतौर अध्यक्ष कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल मौजूद रहे। इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल के अलावा मुख्य वक्ता के रुप में जेएनयू से प्रो. मोंदीरा दत्ता और चीफ पोस्ट मास्टर जनरल अंबेश प्रकाश उपमन्यु सहित कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार मौजूद रहे। केंद्रीय विवि की अनुसंधान परियोजना समूह के निदेशक एवं शिक्षा स्कूल से सहायक प्रोफेसर डा. ललित मोहन शर्मा ने कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल का स्वागत करते हुए उनका इस कार्यक्रम में भाग लेने का आभार जताया। मुख्य वक्ता प्रो. मोंदीरा दत्ता ने कहा कि हिमाचल की भूगौलिक परिस्थितियां काफी भिन्न हैं। वाबजूद इसके इस योजना के क्रियान्वयन में सभी विभागों के कर्मचारियों की भूमिका काफी सराहनीय रहती है। वहीं अध्यक्ष प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि सुकन्या समृद्धि योजना हमारी युवा लड़कियों के लिए आशा और सशक्तिकरण की किरण के रूप में खड़ी है, जो व्यवस्थित वित्तीय नियोजन के माध्यम से एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य प्रदान करती है। इस परिवर्तनकारी योजना पर चर्चाओं, अंतर्दृष्टि और ज्ञान के प्रसार के लिए एक मंच प्रदान करके, हमारा उद्देश्य जागरूकता और भागीदारी को उत्प्रेरित करना है, यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बालिका को उन अवसरों तक पहुंच प्राप्त हो जिसकी वह हकदार है। सुकन्या समृद्धि योजना इस प्रतिबद्धता के लिए एक वसीयतनामा के रूप में खड़ी है, जो हमारी बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सरकार के समर्पण को दर्शाती है। विकसित भारत 2047 में भारत की भूमिका क्या रहेगी उसमें महिलाओं की सशक्त सहभागिता दिखेगी। बेटियां स्वावलंबी होंगी तो समाज स्वावलंबी होगा और उसी से फिर राष्ट्र स्वावलंबी होगा। भारत को विश्वगुरू बनने में महिलाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह योजना जन-जन तक पहुंचे इसके लिए समाज को आगे आना होगा। कार्यक्रम का संचालन डा. ओमप्रकाश प्रजापति ने किया। वहीं धन्यवाद ज्ञापन डा. अमरीक सिंह ने दिया। वहीं इस मौके पर प्रो. सुनील, प्रो. मनोज कुमार सक्सेना, डा नरेश, प्रो. खेमराज, प्रो अंबरीश कुमार महाजन और प्रो. विशाल सूद सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

"डिजी-एजु 2024: ट्रांसफॉर्मिंग एजुकेशन एंड लर्निंग सिस्टम्स" विषय पर सम्मेलन आयोजित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर-1 के सेमिनार हॉल में कंसोर्टियम फॉर एजुकेशनल कम्युनिकेशन के सहयोग से नेशनल कॉन्फ्रेंस "DigiEdu2024" का शुभारंभ किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय ''DigiEdu2024-ट्रांसफॉर्मिंग एजुकेशन एंड लर्निंग सिस्टम्स'' रहा। इस मौके पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. पी. बंसल ने कहा कि डिजिटल एजुकेशन के माध्यम से ट्रांफॉर्मिंग एजुकेशन, हॉलिस्टिक डेवलपमेंट और एक्सपेरिमेंटल एजुकेशन दी जा सकती है। केंद्रीय विश्वविद्यालय में भी डिजिटल शिक्षा और स्किल कॉर्सेज पर काम हो रहा है ताकि विद्यार्थियों को ड्रिग्री के साथ स्किल प्रमाण पत्र भी मिलें। विश्वविद्यालय को डिजिटल एजुकेशन में और मजबूत बनाने के लिए सी.ई.सी का साथ जरूरी है। इसके लिए सी.ई.सी के डायरेक्टर प्रो. जगत भूषण नड्डा का शुक्रगुजार हूं। डिजिटल एजुकेशन के माध्यम से समाज के हर तबके तक शिक्षा पहुंचाई जा सकती है। ब्लेंडेड मॉड एजुकेशन के द्वारा दूरदराज़ के गांवों को शिक्षित किया जा सकता है। इसलिए डिजिटल एजुकेशन पर विश्वविद्यालय का फोकस है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित सी.ई.सी. के डायरेक्टर प्रो. जगत भूषण नड्डा ने अपने वक्तव्य में कहा कि, "75 साल बाद शिक्षा तंत्र में अमूलचूल बदलाव आए हैं। मैकाले ने अग्रेज़ी शिक्षा पर ज़ोर देते हुए संस्कृत और अरेबिक भाषा पर प्रतिबंध लगा दिया था। जिसका खामियाजा आज भी हम भुगत रहे हैं। मातृभाषा हमारे अंदर राष्ट्रीयता की भावना को जगाती है। इसलिए हमें अपनी मातृभाषा को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। उन्होंने बताया, डिजिटल एजुकेशन चार प्रकार से दी जा सकती है। पहला- फीचर फिल्म, दूसरा- डॉक्युमेंट्री, तीसरा- कॉर्स रन और चौथा डिजी एडुकेशन। इन चार तरीकों का इस्तेमाल कर डिजिटल एजुकेशन को बड़ी आबादी तक पहुंचाया जा सकता है। प्रो. विशाल सूद ने सभागार में उपस्थित सभी का अभिवादन करते हुए कहा कि, सीईसी के सहयोग से हुए इस सम्मेलन से विद्यार्थियों को काफी फायदा होगा। इस सम्मेलन में प्रस्तुत शोध पत्रों को डॉक्यूमेंट किया जाएगा ताकि ज्ञान के भंडार में वृद्धि हो सके। इस दौरान कुल दो सत्रों का आयोजन हुआ जिनकी अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्रो. धीरेंद्र शर्मा और सेंट बेडेज़ कॉलेज की सह आचार्य डॉ. सपना शर्मा ने की। इस सम्मेलन का आयोजन 7 से 9 मार्च 2024 के बीच हुआ। कंप्यूटर साइंस एवं इंफॉर्मेटिक्स और शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय सम्मेलन में डिजिटल एजुकेशन पर फोकस रहा।

शिक्षा के परिदृश्य को नया आकार देने में डिजिटल प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

इस सम्मेलन का उद्देश्य शिक्षा में डिजिटलीकरण के बहुमुखी पहलुओं पर विचार करने के लिए शिक्षकों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और उद्योग विशेषज्ञों को एक साथ लाया गया। इस कार्यक्रम में कुल 10 सत्र हुए। प्रत्येक सत्र में विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा अध्यक्षता की गई। इस सम्मलेन में भारत के विभिन्न हिस्सों से 100 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

इस सम्मलेन में 125 शोध पत्र प्राप्त हुए, जिसमें शोध पत्र प्रस्तुति के लिए 79 शोध पत्रों का चुनाव किया गया। समन्वयक के तौर पर प्रो. प्रदीप चौकसे, प्रो. राजिंदर सिंह और डॉ शत्रुधा मौजूद रहे। सम्मेलन में पैनल चर्चा, कार्यशाला और पेपर प्रस्तुतियां शामिल रही।

सीयू में शुरू होगा हिमाचल की भाषाओं पर सर्टिफिकेट कोर्स

'भारतीय शिक्षण मंडल' सीयू, 'भारतीय भाषा समिति' के संयुक्त तत्वावधान में सम्मेलन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश की मातृभाषाओं और पहाड़ी बोलियों को बढ़ावा देने तथा उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए एक सम्मलेन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का उद्देश्य अपनी मातृभाषाओं के साथ - साथ अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने का अनुकूल वातावरण विकसित करना रहा। अकादमिक विमर्श, शोध पत्र प्रस्तुति और हिमाचल की लोक भाषाओं में काव्य पाठ के उद्देश्य से 'भारतीय शिक्षण मंडल' सीयू और 'भारतीय भाषा समिति', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में धौलाधर परिसर 1 में 'भारतीय भाषा सम्मेलन' का आयोजन किया गया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि प्रो. सत प्रकाश बंसल ने की। वहीं बतौर विशिष्ट अतिथि कर्नल (मानद) प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत (ओएसडी, उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा) और मुख्य वक्ता प्रो. जगदीश शर्मा पूर्व निदेशक, अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली मौजूद रहे। वहीं अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार और कुलसचिव प्रो.सुमन शर्मा सहित अन्य संकाय सदस्य मौजूद रहे। पर प्रो. सत प्रकाश बंसल ने सभा का मार्गदर्शन किया। उन्होंने भारतवर्ष की विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं का सम्मान करते हुए पहाड़ी व हिमाचली बोलियों के संवर्धन की बात की और बताया कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि में जल्द ही हिमाचली भाषाओं में सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया जाएगा । कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत ने शोधार्थियों को जिज्ञासु प्रवित्ति का बनने पर जोर दिया और मातृभाषाओं पर बात करते हुए बताया कि भारत में लगभग 1369 मातृभाषाएं और 19569 बोलियां हैं। इस समारोह के द्वितीय सत्र में हिमाचल प्रदेश के कई सम्माननीय साहित्यकार, शिक्षाविद, संपादक व पत्रकारों ने एकजुट होकर मातृ भाषाओं के उत्तरोत्तर विकास के लिए विचार मंथन किया । जिससे हिमाचल की लोकभाषाओं के विकास के लिए भारतीय भाषा समिति को कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए। प्रो. जगदीश शर्मा जी ने बताया कि उन्होंने "द लैंग्वेजेस ऑफ हिमाचल प्रदेश" का हिंदी और हिमाचल प्रदेश की बोलियों में अनुवाद कार्य किया है और ऐसे कार्यों को बढ़ावा मिलना चाहिए । साथ ही उनका सुझाव है कि भारत की अन्य कई प्रादेशिक भाषाओं को आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा की अनिवार्यता पर भी जोर दिया। इस विमर्श से विकसित भारत के निर्माण में भारतीय भाषाओं की भूमिका और सामाजिक सांस्कृतिक -आर्थिक प्रगति के लिए मातृभाषाओं में शिक्षा की अनिवार्यता पर जोर दिया गया । इस कार्यक्रम में डॉ० गौतम व्यथित, डॉ. विजय शर्मा, डॉ सुशील कुमार फुल्लॉ, डॉ. प्रत्यूष गुलेरी जी, पारुल अरोड़ा, विकास निखारा, डॉ. चंद्र रेखा डढवाल जी, प्रभात शर्मा जी, सुरेश भारद्वाज, युगल किशोर डोगरा, हरि कृष्ण मुरारी, पवनेन्द्र पवन, करतार चन्द कंवर, डॉ.सरोज परमार, डॉ मीनाक्षी दत्ता, विनोद कुमार भावुक, नवनीत शर्मा, दुर्गेश नन्दन, डॉ. अदिति गुलेरी, राजीव त्रिगर्ती, भूपेन्द्र कुमार भूपी, आनन्द स्वरूप धीमान जी, राजेन्द्र पालमपुरी जैसे प्रख्यात साहित्यकार, शिक्षाविद, संपादक व पत्रकारों की महनीय उपस्थिति रही । कार्यक्रम में पहाड़ी लोक कविताओं का पाठ कर राष्ट्र एवं समाज को सही दिशा देने का कार्य किया । इस भव्य कार्यक्रम के संयोजक व समन्वयक ओम प्रकाश प्रजापति, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, हि.प्र.के.विवि. रहे एवं कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों में संचालन डॉ नंदूरी राज गोपाल, डॉ प्रीति सिंह, प्रो चंद्रकांत सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अशोक कुमार द्वारा विभिन्न शिक्षाविदों एवम साहित्यकारों का आभार ज्ञापन किया गया । कार्यक्रम के सफल आयोजन में अधिष्ठाता भाषा संकाय प्रो. रोशन लाल शर्मा और हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मलकीयत सिंह की महती भूमिका

कुलाधिपति की आत्मकथा बनेगी पाठ्यक्रम का हिस्सा- प्रो. बंसल

पंजाबी एवं डोगरी विभाग द्वारा आत्मकथा 'लेखे आवे भाग' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पंजाबी एवं डोगरी विभाग की ओर से पद्मश्री प्रो. हरमोहिंदर सिंह बेदी की आत्मकथा 'लेखे आवे भाग' पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी करवाई गई । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने की । कार्यक्रम में पद्मश्री हरमोहिंदर सिंह बेदी मुख्य अत्तिथि के तौर पर उपस्थित रहे । इसके अतिरिक्त डॉ. गुरनाम कौर बेदी जो की कुलाधिपति की धर्मपत्नी हैं, वे विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुईं। पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के गुरु नानक अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. गुरपाल सिंह संधू एवं पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के हिंदी विभाग की सहायक आचार्य डॉ नीतू कौशल, पंजाबी कवि एवं चिंतक डॉ दविंदर सैफी मुख्य वक्ता के रूप में शामिल रहे । इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो सुमन शर्मा तथा डीन अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार ने भी कार्यक्रम में शिरकत की । इस कार्यक्रम की शुरुआत ज्योति प्रज्जवलन और मंगलाचरण के साथ हुई । इसके बाद डॉ. नरेश कुमार ने सभी अतिथियों विद्यार्थियों का स्वागत किया । इसके उपरांत दविंदर सैफी ने डॉ. हरमोहिंदर सिंह बेदी की आत्मकथा 'लेखे आवे भाग' के बारे में अपना खोज पत्र पढ़ा । अपने पत्र के माध्यम से उन्होंने बताया कि आत्मकथा हरमिंदर सिंह बेदी के अक्स अस्तित्व के बारे में बहुत कुछ बताती है । हरमिंदर सिंह बेदी का जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है । इस आत्म कथा के बारे में डॉक्टर गुरपाल सिंह संधु ने कहा कि आत्म कथा पंजाब और हिमाचल की भावनात्मक साँच की बात करती है, साथ ही उन्होंने कहा कि हरमिंदर सिंह बेदी का जीवन सफ़र बहुत ही शानदार रहा है । इस कार्यक्रम में डॉ गुरनाम कौर बेदी ने आत्मकथा के बारे में कहा कि इस आत्म कथा में जो भी लिखा गया है बिलकुल सच है और मैं उसकी साक्षी हूँ। इस आत्म कथा के बारे में डॉ नीतू कौशल जी ने भी अपना शोध पत्र पढ़ा ।

अंत में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सत प्रकाश बंसल ने सबके साथ अपने विचार साझा किए और इस अवसर पर उन्होंने पंजाबी एवं डोगरी विभाग के सहायक आचार्य एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ नरेश कुमार से कहा कि आत्म कथा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाये ।

इस कार्यक्रम में पंजाबी एवं डोगरी विभाग के अध्यक्ष डॉक्टर खेमराज शर्मा, अधिष्ठाता भाषा स्कूल प्रो. रोशन लाल शर्मा और डॉ. हरजिंदर सिंह का प्रमुख योगदान रहा ।

इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, अधिष्ठाता, शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे । कार्यक्रम में कुल 300 प्रतिभागी शामिल रहे ।

राष्ट्रीय पर्यटन दिवस पर केंद्रीय विश्वविद्यालय में समारोह का आयोजन

धर्मशाला। 25 जनवरी को हर साल भारत के राष्ट्रीय पर्यटन दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी संदर्भ में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के पर्यटन और यात्रा विभाग की ओर से इस वर्ष की थीम "सतत यात्राएँ, कालातीत यादें" के अनुसार समारोह आयोजित किया। विवि के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, पर्यटन विभाग के डीन प्रो. सुमन शर्मा और पर्यटन विभाग के प्रमुख प्रो. आशीष नाग और अन्य शिक्षण संकाय के मार्गदर्शन में यह समारोह आयोजित किया।

पर्यटन विभाग के प्रमुख प्रो. आशीष नाग में बताया कि पर्यटन स्कूल के शोधार्थियों द्वारा धर्मशाला निकटवर्ती गाँव फ़तेहपुर में एक सामुदायिक पहुंच कार्यक्रम आयोजित किया गया । जहां उनकी मुलाकात स्थानीय कलाकार सोनू कुमार से हुई जो बांस से बनी सजावटी वस्तुओं के हस्तशिल्प निर्माता हैं। छात्रों ने सोनू के साथ बातचीत की और इन पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों की उत्पादन तकनीकों और लाभों के बारे में सीखा। साथ ही छात्रों ने स्थानीय कलाकारों को बढ़ावा देने का भी प्रयास किया ।

कार्यक्रम के समापन के लिए एक ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता आईएचएम शिमला के प्रिंसिपल डॉ. मुकुल डिमरी ने एक इंटरैक्टिव व्याख्यान दिया और सभी को पर्यटन हितधारकों द्वारा स्थायी प्रथाओं के माध्यम से आगंतुकों के लिए यादगार अनुभव के निर्माण पर जोर देने के लिए प्रेरित किया। इसमें शोधार्थी और पर्यटन अध्ययन के स्नातकोत्तर छात्र शामिल रहे।

पराक्रम दिवस पर सुभाष चंद्र बोस के जीवन संघर्ष को उकेरा

स्क्रोल पेंटिंग वर्कशॉप में सीयू के मनीष कुमार ने दिखाई प्रतिभा

धर्मशाला। सुभाष चंद्र बोस जयन्ती (पराक्रम दिवस) के उपलक्ष्य में संस्कृति मंत्रालय के अधीनस्थ ललित कला अकादमी नई दिल्ली और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संयुक्त तत्वाधान में छः दिवसीय स्क्रोल पेंटिंग वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से कलाकारों का चयन किया गया। इनमें हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग के सहायक प्रोफेसर मनीष कुमार गोंड का चयन कर आमन्त्रित किया गया। इस राष्ट्रीय कला वर्कशॉप में चयन हेतु सहायक प्रोफेसर मनीष कुमार गोंड को कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और अन्य संकाय सदस्यों ने शुभकामनाएं एवं बधाईयां दीं।

मनीष कुमार गोंड के समूह में कुल आठ कलाकारों ने मिलकर इग्नू के प्रोफेसर डॉ लक्ष्मण प्रसाद के मार्गदर्शन में 30 फिट की स्क्रोल पेंटिंग को बनाया जिसमें सुभाष चंद्र

बोस के जीवन संघर्ष और देश प्रेम की गाथा को उकेरने का कार्य किया। इस पेंटिंग को दिल्ली के लाल किले में प्रदर्शित किया गया जिसका उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। इस राष्ट्रीय कला वर्कशॉप में चयन हेतु सहायक प्रोफेसर मनीष कुमार गोंड को कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और अन्य संकाय सदस्यों ने शुभकामनाएं एवं बधाईयां दीं।

स्वयंसेवकों ने तिरंगा रैली निकाल लोगों को किया जागरूक

सीयू के देहरा परिसर में एनएसएस इकाई ने मनाया संकल्प दिवस

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के सप्त सिंधु परिसर देहरा की एनएसएस इकाई-I की ओर से Parliament Resolution Day के उपलक्ष्य में संकल्प दिवस मनाया गया l संकल्प दिवस के अंतर्गत एक संगोष्ठी एवं विशाल तिरंगा रैली का आयोजन एनएसएस(NSS) इकाई-I, कार्यक्रम अधिकारी, डॉ श्रेया बख़्शी की ओर से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वक्ता अधिष्ठाता छात्र कल्याण, प्रो. सुनील रहे।

संगोष्ठी की शुरुआत में कार्यक्रम अधिकारी ने विषय की पृष्ठभूमि रखी जिसमें स्वयंसेवकों को पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू कश्मीर (POJK) के बारे में तथा 22 फ़रवरी, 1994 को भारतीय संसद द्वारा पारित किए गए प्रस्ताव से भी अवगत करवाया गया। अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि प्रो. सुनील ने अखंड भारत की बात करते हुए कहा कि हमें अपने उस भू-भाग को अपने मन चिंतन में भी हमेशा जीवित रखना है। इसके प्रति जागरूकता भी फैलानी है। इसके उपरांत मुख्य अतिथि ने इकाई की NSS की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए स्वयंसेवकों को प्रोत्साहित किया और भविष्य में भी ऐसी गतिविधियां करने को कहा।

विशाल तिरंगा रैली जो देहरा के बाज़ार से होते हुए विश्वविद्यालय में वापस आकर समाप्त हुई उसमें स्वयंसेवकों ने तथा शिक्षकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वयंसेवकों ने रैली द्वारा समाज एवं आम जनमानस को जागरूक करने का पूरा प्रयास किया। रैली में अधिष्ठाता समाज विज्ञान संकाय प्रो. संजीत सिंह, परिसर के सहायक निदेशक, प्रो. निरुपमा सिंह, प्रो. आशुतोष प्रधान, प्रो. अनिल कुमार, डॉ शशि पूनम, डॉ उज्जवल, डॉ विश्व ज्योति, डॉ ज्योति पराशर, डॉ राम्या, डॉ राघवेन्द्र, डॉ विनोद नायक, डॉ विमल, डॉ विश्व मोहन, डॉ दिनेश पाल, डॉ वेद पालीवाल और अन्य संकाय सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

सविता और वीना ने झटपट बूझे सारे सवाल, प्रथम रहीं

वर्ल्ड वेटलैंड डे पर सीयू के मोनाल क्लब के सदस्य छाए

धर्मशाला। प्रदेश वन विभाग की ओर से पौंग डैम में मनाए गए वर्ल्ड वेटलैंड डे के अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के मोनाल क्लब के सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। वन विभाग की ओर से इस मौके पर कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, क्रॉस वर्ड बर्ड वाचिंग और बर्ड फोटोग्राफी आदि प्रमुख रहीं। मोनाल क्लब के सदस्यों ने इन सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिस्पर्धा दिखाई और पुरस्कार हासिल किए।

जानकारी के अनुसार इस मौके पर आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार सविता एवं वीना ने जीता । वहीं तृतीय पुरस्कार तनवी एवं मीनल ने जीता, क्रॉसवर्ड में प्रथम स्थान पर तनवी, तृतीय पर वीना रही। वहीं बर्ड वाचिंग में नेहा, इशानी, योगिता, सपना, अमित, रुबीना ने द्वितीय पुरस्कार जीता। इन सभी प्रतिभागियों को कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार सहित स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज के विशेषज्ञों की पूरी टीम को हार्दिक बधाई। वहीं विभागाध्यक्ष जन्तु विभाग प्रो सुनील ठाकुर, डॉ राकेश ने विजेताओं को इस तरह की प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वहीं पोंग बांध वन्यजीव अभयारण्य में हाल ही में संपन्न वार्षिक जल पक्षी गणना में, संरक्षणवादियों ने चिंता व्यक्त की है। दर्ज की गई पक्षियों की कुल संख्या में पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट देखी गई है। वेटलैंड में 85 प्रजातियों के कुल 83,555 पक्षियों की गिनती की गई, जो पक्षियों के जीवन को प्रभावित करने वाले कारकों की एक जटिल परस्पर क्रिया को दर्शाता है।

ई. विक्रम, मुख्य संरक्षक, रॉयस्टन, उप वन्यजीव संरक्षक और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. राकेश ठाकुर की विशेषज्ञ राय इस गिरावट के पीछे संभावित कारणों पर प्रकाश डालती हैं।

उनका सुझाव है कि प्रवासी पक्षियों की कम संख्या का कारण उनके मूल आवासों में तापमान वृद्धि का रुझान हो सकता है, जो पक्षियों को पलायन करने के लिए प्रेरित कर रहा है। भोजन की अनुपलब्धता पक्षियों के प्रवास को कम करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, और संसाधनों की कमी उनके पैटर्न को प्रभावित कर सकती है।

इस वर्ष की गिनती में देखी गई गिरावट के बाद भी, विशेषज्ञ भविष्य के बारे में आशावाद व्यक्त करते हैं। उनका अनुमान है कि आने वाले वर्षों में पक्षियों की आबादी और प्रजातियों की संख्या दोनों में वृद्धि होगी, बशर्ते कि जलवायु संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस प्रयास किए जाएं और आर्द्रभूमि आवासों के लिए पर्याप्त खाद्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

प्रश्नोतरी प्रतियोगिता में स्नेहा और नाभि रहीं पहले स्थान पर

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर दो में "विकसित भारत@2047" विषय पर करियर क्लब की ओर से वादविवाद और प्रश्नोतरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मौके पर अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे और उन्होंने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संयोजन एमबीए के आयुष की ओर से किया गया। वादविवाद प्रतियोगिता में एमबीए के ऋषभ प्रथम, स्नेहा मिश्रा द्वितीय, हर्षित शर्मा तृतीय स्थान पर रहे ।

वहीं प्रश्नोतरी में एमबीए में स्नेहा मिश्रा एवं नाभि शर्मा प्रथम, विकल्प चौहान एवं सुमना आर. दूसरे, गगन कुमार और अभिनव शर्मा तीसरे स्थान पर रहे। इस मौके पर मुख्य अतिथि ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी और उन्हें इस तरह की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर डॉ रीता देवी, डॉ. रुचि शर्मा, डॉ. भावना, और डॉ. देवेश सहित क्लब के संयोजक और सह-संयोजकों ने आयोजन की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रो. दीपांकर शर्मा, विभागाध्यक्ष, सम्मानित अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार का स्वागत किया। वहीं डॉ. देवेश कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया।

वहीं एचपीकेवी बिजनेस स्कूल के कैंपस टू करियर क्लब और क्यूरियोसिटी क्लब की ओर से आयोजित "फ़ुटप्रिंट्स ऑफ़ मेस्ट्रो" व्याख्यान श्रृंखला के तत्वावधान में नेतृत्व उत्कृष्टता पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

विद्यार्थियों ने भाषण के माध्यम से प्रस्तुत की विकसित भारत की तस्वीर

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में 9 जनवरी को "विकसित भारत @2047" के तहत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर -एक के सेमिनार हाल में सुबह 10.30 से शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल रहे। समापन समारोह में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर ने प्रतिभागियों को सम्मानित किया। जिला स्तरीय आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम के दौरान विजेता रहे प्रतिभागियों को राज्य स्तरीय कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया। जिसमें पहला पुरस्कार हासिल करने वाले को एक लाख रूपये, दूसरा पुरस्कार हासिल करने वाले को 50 हजार, तृतीय पुरस्कार हासिल करने वाले को 25 हजार और चौथा पुरस्कार हासिल करने वाले को भी 25 हजार रुपये इनाम में दिए गये।

इस संबंध में "विकसित भारत @2047" के नोडल अधिकारी एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर के अनुसार नेहरू युवा केंद्र के तत्वावधान में केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर एक के सेमिनार हाल में "विकसित भारत @2047" पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिला स्तरीय इस कार्यक्रम में पूरे जिले के शिक्षण संस्थानों के बच्चों ने भाग लिया। इसमें पहले चार स्थानों पर रहने वाले विजेताओं को 12 जनवरी को होने वाले राज्यस्तरीय कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। नेहरू युवा केंद्र के सौजन्य से आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में केंद्रीय विश्वविद्यालय की सहभागिता रहेगी। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण में भागीदारी बढ़ाने के लिए युवाओं में महत्वाकांक्षा बढ़ोत्तरी और देश भक्ति की भावना को मजबूत करने के साथ अमृत काल के दौरान भारत की विकास यात्रा में सक्रिय भूमिका निभाने और उनके आगे के विकास और सशक्तीकरण के लिए नेतृत्व गुणों, संचार कौशल के साथ युवाओं की पहचान करना है ।

इसके साथ ही युवा वक्ताओं को कौशल दिखाने और अपने साथियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए मंच प्रदान करना है । इसके लिए प्रतिभागी की आयु 12 जनवरी 2024 तक 15 से 29 वर्ष की होनी चाहिए और प्रतिभागी जिला काँगड़ा का स्थायी निवासी होना चाहिए।

विद्यार्थियों ने ओडिशा के साथ साझा की हिमाचली संस्कृति

"एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम" कार्यक्रम के तहत 50 विद्यार्थियों का दल रवाना

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की ओर से प्रस्तावित "एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम" कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्ष हिमाचल प्रदेश से दायित्व मिला है। इस युवा संगम में हिमाचल प्रदेश के 9 संस्थानों के 45 शिक्षार्थी यात्रा कार्यक्रम का हिस्सा बन रहे हैं। बुधवार को प्रदेश के विभिन्न संस्थानों के विद्यार्थियों और समन्वयकों का दल जिन्हें कुलपति हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय प्रो.सत प्रकाश बंसल ने रवाना किया। इसमें हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, सरदार पटेल विश्वविद्यालय मंडी. आईआईटी मंडी, आईआईएम सिरमौर, कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर, बागवानी विश्वविद्यालय सोलन, एनआईटी हमीरपुर, तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर से शिक्षार्थी इस युवा संगम कार्यक्रम सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। लिंग अनुपात की दृष्टि से 50 % छात्र और 50% छात्राएं चयन के मानदंड में रखे गए हैं | हिमाचल प्रदेश की लोक-परम्परा और संस्कृति को दर्शाने के लिए प्रत्येक प्रतिभागी अपने–अपने जिले का नेतृत्व करेंगे यह भी सुनिश्चित किया गया है।

इस मौके पर कुलपति प्रो. बंसल ने दल को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं। उन्होंने कहा कि जो भी छात्र-छात्रा इस युवा संगम में अपनी सहभागिता दिखा रहे हैं, उनके लिए यह बहुमूल्य पल है।

छात्र जीवन का अपना महत्व है। फिर दूसरे राज्य के छात्रों के साथ अपनी संस्कृति को साझा करने का अवसर उन्हें मिल रहा है। उम्मीद है शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की ओर से "एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम" कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्ष हिमाचल प्रदेश से दायित्व मिला है, उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। हम बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील कुमार ने कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी का स्वागत करते हुए इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। कार्यक्रम समन्वयक प्रो. जगदीप सिंगला ने इस कार्यक्रम के दौरान होने वाली विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। इस मौके पर कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार उपस्थित रहे।

ओडिशा यात्रा पर निकली हिमाचली टीम ने किया विभिन्न प्रौद्योगिकी संस्थानों का दौरा

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के तत्वावधान में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के तहत ओडिशा गयी हिमाचल की 45 विद्यार्थियों की टीम ने भ्रमण के दूसरे दिन कौशल विकास संस्थान, भुवनेश्वर (स्किल डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट) का दौरा किया। इस दौरान छात्रों ने भारत सरकार द्वारा देशभर के लोगों को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए दी जाने वाली ट्रेनिंग के बारे में विस्तार से जाना। इसके साथ ही कौशल विकास संस्थान, भुव नेश्वर में चल रहे विभिन्न कौशल विकास योजना के कोर्सेज के बारे में भी छात्रों को जानकारी दी गयी। इसी कड़ी में छात्रों ने इस योजना से जुड़े हुए कई प्रश्न भी पूछे जिनके जवाब कौशल विकास संस्थान, भुवनेश्वर के प्रध्यापकों ने दिए। वहीं छात्रों ने कौशल विकास संस्थान, भुवनेश्वर की लैब का भी मुआइना करते हुए विभिन्न आधुनिक तकनीकों को जाना और समझा। भ्रमण के अगले भाग में टीम ने रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (इंस्टिट्यूट ऑफ़ केमिकल टेक्नोलॉजी) का भी दौरा किया। इस दौरान रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. पी.आर. वाविया ने हिमाचल टीम के सभी छात्रों को संस्थान के बारे में बताते हुए विभिन्न आधुनिक शोध के बारे में भी बताया। उन्होंने छात्रों को केमिकल इंजीनियरिंग के बारे में हुए देशभर में रसायन के चल रहे प्रोजेक्ट्स के बारे में भी बताया। वहीं दूसरे दिन के अंत में आईआईटी भुवनेश्वर की लैब में आधुनिक तकनीक व मशीनरी के बारे में जानते हुए अपने ज्ञान में इजाफा किया। इसके साथ ही आईआईटी के निदेशक से मुलाकात के दौरान छात्रों ने उनसे कई तरह के सवाल-जवाब भी किये। छात्रों की मानें तो ओडिशा के साथ छात्र सांस्कृतिक आदान-प्रदान यात्रा के दौरान काफी कुछ देखने, जानने व समझने का मौका मिल रहा है जो कि सरकार की एक विशेष पहल है। इस दौरान आईआईएसईआर बरहमपुर की टीम ने हिमाचल प्रदेश की टीम का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें हरेक बारीकी से रूबरू करवाया। वहीं हिमाचल टीम के कोऑर्डिनेटर डॉ. हरीश गौतम ने बताया कि छात्रों ने ओडिशा में विभिन्न नई तकनीकों को जाना और समझा। भ्रमण के दूसरे दिन टीम ने युवा संगम के तहत एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम की थीम प्रौद्योगिकी को पूरा करते हुए ओडिशा के विभिन्न स्थानों को देखा व नई प्रौद्योगिकी को समझा।

ओडिशा में हिमाचल टीम ने पौराणिक खंडगिरी और उदयगिरी गुफाओं का किया दौरा

ओडिशा की जनजातीय जीवनशैली से भी हुए रूबरू

धर्मशाला। ओडिशा भ्रमण पर निकले हिमाचल प्रदेश के 45 छात्रों की टीम ने पौराणिक खंडगिरी और उदयगिरी गुफाओं का दौरा किया। इस दौरान आईआईएसईआर बरहमपुर की टीम द्वारा गाइड की व्यवस्था की गयी थी जिन्होंने गुफाओं की पौराणिक महत्ता व इसके बारे में अन्य जानकारी छात्रों के साथ साझा की। इसके साथ ही हिमाचल टीम ने ओडिशा के ट्राइबल कल्चर को समझने के लिए ओडिशा ट्राइबल म्यूजियम का भी भ्रमण किया। ट्राइबल म्यूजियम में भ्रमण करते हुए छात्रों ने ओडिशा की संस्कृति व विभिन्न जनजातियों (ट्राइब्स), उनकी परम्परा व धार्मिक संस्कारों के बारे में जाना। इस कड़ी में छात्रों ने म्यूजियम के प्रांगण में स्थापित किये गये आदिवासियों के देवी-देवताओं के संदर्भ में भी अपने ज्ञान में बढ़ोत्तरी की। डॉक्यूमेंट्री के जरिये आदिवासियों की जीवनशैली व उनकी प्रतिष्ठाओं के बारे में भी विस्तार रूप से बताया गया। हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के तत्वावधान में गयी हिमाचल के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों की टीम ने भ्रमण के तीसरे दिन दोपहर बाद धौली में दया नदी के किनारे स्थापित बुद्ध शांति स्तूप का भी दौरा किया। भ्रमण पर गये छात्रों ने बताया कि इस तरह के सांस्कृतिक मिलन के कार्यक्रमों को और भी अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए। छात्रों की मानें तो ओडिशा में विभिन्न स्थानों का भ्रमण करना अपने आप में एक अनोखा अनुभव है। छात्रों के अनुसार इस परस्पर यात्रा में आना और ओडिशा के बारे में जानना उनकी यात्रा को सार्थक करने जैसा है।

वहीं दूसरे दिन के अंत में आईआईटी भुवनेश्वर की लैब में आधुनिक तकनीक व मशीनरी के बारे में जानते हुए अपने ज्ञान में इजाफा किया। इसके साथ ही आईआईटी के निदेशक से मुलाकात के दौरान छात्रों ने उनसे कई तरह के सवाल-जवाब भी किये। छात्रों की मानें तो ओडिशा के साथ छात्र सांस्कृतिक आदान-प्रदान यात्रा के दौरान काफी कुछ देखने, जानने व समझने का मौका मिल रहा है जोकि सरकार की एक विशेष पहल है। शाम में हिमाचली टीम को ओडिशा के भुवनेश्वर शाम में हिमाचली टीम को ओडिशा के भुवनेश्वर के एकाम्र हट में ले जाया गया। इसके साथ बच्चों ने ओडिशा के बाजार में शोपिंग कर ओडिशा की भेंट की भी खरीदारी भी की।

इस दौरान आईआईएसईआर बरहमपुर की टीम ने हिमाचल प्रदेश की टीम का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें हरेक स्थान के इतिहास व वहां की रोचक गाथाओं से रूबरू करवाया।

हिमाचल टीम के कोऑर्डिनेटर डॉ. हरीश गौतम ने बताया कि इस भ्रमण के तीसरे दिन छात्रों ने ओडिशा की संस्कृति को समझने का मौका मिला जिसमे यहाँ की जनजातीय जीवनशैली के बारे में जाना गया। इसके साथ पौराणिक गुफाओं के दर्शन कर यहाँ के इतिहास को और भी करीब से जाना।

उन्होंने बताया कि छात्र युवा संगम की एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत चले इस परस्पर मिलन यात्रा का खूब आनंद लिया व ओडिशा के बारे में काफी बेहतरीन यादें बनाई।

ओडिशा के विद्यार्थियों ने लिए हिमाचली धाम के स्वाद

छात्र-विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत ओडिशा से हिमाचल पहुंचा छात्रों का दल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में छात्र विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत ओडिशा से पहुंचे छात्रों का दल का जोरदार स्वागत हुआ। यह दल 4 अप्रैल तक हिमाचल दौरे पर रहेगा। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने छात्रों के साथ आए समन्वयकों का भी स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्र अधिष्ठाता कल्याण प्रो. सुनील ने कार्यक्रम के संबंध में जानकारी दी। इस मौके पर अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार ने कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल का स्वागत किया। वहीं कुलपति प्रो. बंसल ने इस मौके पर विशेष रुप से मौजूद नौणी विवि के कुलपति प्रो. राजेश्वर चंदेल का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्र विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के समन्यवक प्रो. इंद्र सिंह ठाकुर, प्रो. जगदीप सिंगला, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, एचपीयू से डीआर ठाकुर, पीयू से प्रो. राजिंद्र मौजूद रहे। इस मौके पर कुलपति ने कहा कि आने वाले 10 दिनों तक छात्र विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इसमें पांच उद्देश्यों ''पर्यटन, परंपरा, परस्पर संपर्क, प्रौद्योगिकी और प्रगति'' को लेकर छात्र विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थी एक –दूसरे के बारे में जान रहे हैं नई-नई तकनीकी और क्रियाकलापों से रूबरू हो रहे हैं। इस मौके पर नौणी विवि के कुलपति प्रो. चंदेल ने कहा कि छात्र विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत बच्चों को एक-दूसरे राज्य की संस्कृति को जानने का अवसर मिल रहा है। ओडिशा और हिमाचल दोनों राज्य पारंपरिक विरासत के धनी हैं। दोनों राज्यों में बहुत सारी ऐसी विशेषताएं हैं जो आपस में एक-दूसरे को जोड़ती हैं। गौरतलब है कि छात्र विनिमय और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को प्रदेश की ओर से समन्वयक बनाया गया है और हाल में 45 विद्यार्थियों का दल ओडिशा का भ्रमण करके प्रदेश लौटा है। अभी आए ओडिशा के विद्यार्थियों ने भ्रमण के पहले दिन हिमाचली धाम का लुत्फ उठाया। उसके बाद उन्हें धर्मशाला में स्थानीय जगहों पर ले जाया गया।

पंजाब की लूडी और हिमाचल के झमाकड़ा ने लूटी वाहवाही

सीयू ने करवाया "अंतरराज्ययीय छात्र विनिमय" कार्यक्रम

धर्मशाला। खेल, युवा और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विभाग, गुजरात सरकार और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के सौजन्य से धर्मशाला कालेज के सभागार में "अंतरराज्ययीय छात्र विनिमय" कार्यक्रम के तहत सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसमें पंजाब, गुजरात और हिमाचल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने किया। इस मौके पर अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा मौजूद रहे।

इस मौके पर कुलपति प्रो. बंसल ने कहा कि मौजूदा समय में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय इस तरह की मेजबानी कर रहा है । इसी तरह गुजरात कल्चरल स्पोर्ट्स और पंजाब कल्चर के साथ मिलकर यह जो कार्यक्रम हो रहा है इसका मुख्य उद्देश्य यही है कि राज्यों में सांस्कृतिक गतिविधियों का आदान-प्रदान हो। गुजरात, पंजाब के विद्यार्थी के यहाँ हिमाचल के कल्चर से रूबरू हों। इसी के मद्देनजर ऑडिटोरियम में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के द्वारा विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधि रखी गई हैं । हिमाचल का समृद्ध मैसेज यहाँ से ले करके जाएं, हिमाचल की जो अपनी संस्कृति है। इसे उनके समक्ष रखा जाएगा, जिससे कि एक अच्छी यादगार वहाँ पर जाए और वहाँ पर हिमाचल कल्चर को पंजाब और गुजरात में भी प्रमोट करें और इसी तरह से यहाँ पर भी हमारा यही है कि गुजरात कल्चर को और पंजाब के कल्चर को यहाँ पर विद्यार्थियों के बीच में उनकी झलकियां दिखाएं जिससे आपस में इंटर स्टेट कल्चर को प्रमोट करने में मदद मिले। ये राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यही निर्णय लिया गया है कि बच्चों की ओवरआल डेवलपमेंट, समग्र विकास के लिए इस तरह की इंटर स्टेट और इंटर डिस्ट्रिक्ट कल्चरल एक्टिविटीज बहुत जरूरी हैं, जिसके तहत यह कार्यक्रम आयोजित किया है। जो पदाधिकारी यहां पर गुजरात और पंजाब से आए हैं, उनके सहयोग से सीयू इस कार्यक्रम को आयोजित कर

रहा है। इस मौके पर गुजरात लोक नृत्य (गरवा नृत्य), पंजाब (लूडी), हिमाचल (झमाकड़ा), गुजरात (रास नृत्य), पंजाब (जिंदवा) गुजरात (मिश्रित रास) गुजरात (हुडो नृत्य) की प्रस्तुति से खूब वाहवाही लूटी।

तीन दिवसीय अखिल भारतीय इंटर ज़ोनल महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता का आग़ाज़

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय इस बार अखिल भारतीय इंटर जोनल महिला भारोतोलन प्रतियोगिता की मेजबानी कर रहा है। तीन दिवसीय इन खेलों का आयोजन भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सौजन्य से साईं इंडोर खेल परिसर में हो रहा है। बुधवार 07 फरवरी को इन खेलों का विधिवत शुभारंभ हुआ । इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी ने मार्च पास्ट की सलामी ली और खेलों का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि अर्जुन पुरस्कार विजेता एवं कामन वैल्थ पदक विजेता विकास ठाकुर ने शिरकत की । सुबह दस बजे शुरू होने वाले इन खेलों लगभग 89 विश्वविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया । इसमें लगभग 320 खिलाड़ी शामिल हुए । इस मौके पर अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर, कुलसचिव और खेल निदेशक प्रो. सुमन शर्मा और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप सहित तीनों परिसरों के संकाय सदस्य, गैर शिक्षकेतर कर्मी और विद्यार्थी मौजूद रहे ।

युवाओं में हो खेल भावना का विकास- प्रो. सत प्रकाश बंसल

धर्मशाला। भारतीय विश्वविद्यालय संघ एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला की ओर से अखिल भारतीय 'इंटर जोनल महिला भारोत्तोलन' प्रतियोगिता का शुभारंभ 'स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया' के इनडोर स्टेडियम में हुआ। इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल रहे । इस मौके पर अर्जुन पुरस्कार विजेता एवम कॉमन वेल्थ पदक विजेता विकास ठाकुर बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे । इस प्रतियोगिता में 75 विश्वविद्यालय ने भाग लिया, जिसमें नॉर्थ ईस्ट जोन और साउथ जोन के विश्वविद्यालयों से कुल 320 प्रतिभागियों ने भाग लिया | खेल निदेशक और कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा ने कुलपति प्रो. बंसल का स्वागत करते हुए कहा कि चार साल से लगातार हम विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करवा रहे हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। ठाकुर का भी स्वागत किया । वहीं बतौर मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत जय भारत! जय हिमाचल! जय विश्वविद्यालय ! के उद्घोधन से किया। उन्होंने कहा कि विवि कुछ सालों से लगातार इस प्रतियोगिता का आयोजन करवा रहा है।

वहीं विशिष्ट अतिथि अर्जुन पुरस्कार विजेता एवम कॉमन वेल्थ पदक विजेता विकास ठाकुर ने इस आयोजन के लिए विश्वविद्यालय की भूरिशः सराहना की । वहीं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर ने प्रतिभागियों को शपथ दिलाकर नियमानुसार प्रतियोगिता में सहभागिता का आह्वान किया। केनरा बैंककी ओर से इस खेल प्रतियोगिता के लिए पाँच लाख रुपये वित्तीय सहायता भी प्रदान की गई है। इस मौकेपर विवि के तीनों परिसरों से शैक्षणिक कर्मियों,शिक्षार्थियों एवं शिक्षकेतर कर्मियों ने प्रतिभाग किया |

भाषण में सरीना पहले, रजत रहे दूसरे स्थान पर

सीयू में "युवा संवाद" के अंतर्गत 150 युवाओं ने विचार साझा किए

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से धौलाधार परिसर एक के सेमिनार हॉल में "युवा संवाद" के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम "पंचप्रण : एक युवा परिचर्चा" में 150 विद्यार्थियों और स्वयंसेवियों ने भाग लिया। इसके अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता, परिचर्चा एवं संवाद का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में एमकॉम से सरीना कुमारी प्रथम, जंतु विज्ञान विभाग के रजत कुमार द्वितीय, तृतीय स्थान पर क्रमशः अंग्रेजी विभाग की ईशा सिंघल और संस्कृत विभाग के मयंक तिवारी रहे । इस अवसर पर प्रो. सुनील ठाकुर अधिष्ठाता, छात्र कल्याण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। युवा वक्ता के रूप में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित ललित कुमार डोगरा और गणतंत्र दिवस परेड 2024 में हिमाचल का प्रतिनिधित्व करके आई एन एस एस की छात्रा अंशिका रही। कार्यक्रम के संयोजक और एनएसएस के समन्वयक डॉ. मलकीयत सिंह रहे। उन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं और इस तरह के आयोजनों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के मंच युवाओं की सोच को और विकसित करते हैं, पढ़ाई के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर विद्यार्थी मानसिक रूप से सशक्त बनते हैं। इस कार्यक्रम में युवा वक्ता के रूप में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित ललित कुमार डोगरा और गणतंत्र दिवस परेड 2024 में हिमाचल का प्रतिनिधित्व करके आई एन एस एस की छात्रा अंशिका रही। ललित कुमार डोगरा ने जहां विद्यार्थियों के साथ सहज संवाद स्थापित किया तो वहीं अंशिका ने राजपथ पर परेड के अनुभव साझा किये। वहीं भाषण प्रतियोगिता में प्रवीण कुमार, विशाली देवी अमिषा धीमान, स्नेहा मिश्रा, सुरेश कुमार, आशीष कुमार मौर्य, आशीष कुमार तिवारी, उत्कर्ष बोध, प्रीति देवी, स्नेह भारती, आदित्य आदि ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के संयोजक और एनएसएस के समन्वयक डॉ. मलकीयत सिंह ने बताया कि एनएसनस की ओर से माननीय कुलपति प्रो. सत कुमार बंसल के दिशा-निर्देशन में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन लगातार किया जा रहा है और आगे भी किया जाता रहेगा और आगामी दिनों में उनके द्वारा बड़े स्तर पर रक्तदान शिविर लगाए जाएंगे और जागरूकता अभियान चलाए जाएंगे। इस कार्यक्रम में डॉ. वरुण सैनी, डॉ अर्चना कुमारी और डॉ. प्रीति सिंह ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। वहीं मंच का संचालन डा. हेमराज बंसल ने किया।

शिवाजी विवि की आरती ने जीता सर्वश्रेष्ठ भारोत्तोलक का खिताब

धर्मशाला। भारतीय विश्वविद्यालय संघ एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला की ओर से आयोजित अखिल भारतीय इंटर जोनल महिला भारोतोलन प्रतियोगिता में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली ने पहला स्थान हासिल किया है, वहीं मैंगलोर यूनिवर्सिटी कर्नाटक दूसरे स्थान पर और शिवाजी यूनिवर्सिटी महाराष्ट्र तीसरे स्थान पर रही है। वहीं सर्वश्रेष्ठ भारोत्तोलक का खिताब शिवाजी विश्वविद्यालय से आरती तात्गुंती को मिला है। प्रतियोगिता का समापन स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया के इनडोर स्टेडियम में हुआ। इस दौरान मुख्य अतिथि विवि के कुलाधिपति प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी रहे और बतौर विशिष्ट अतिथि कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति प्रो. डी.के. वत्स रहे। वहीं खेल निदेशक और कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार और अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील मौजूद रहे। इस अवसर पर विवि के कुलाधिपति प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने कहा कि यह केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश का खेल क्षेत्र के प्रति सहयोग के साथ अनूठा अनुभव भी है। विश्वविद्यालय के लिए इस प्रतियोगिता का संयोजक बनना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि केंद्रीय विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के व्यवहारिक पक्ष को विद्यार्थियों तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। इस अवसर पर खेल निदेशक व कुल सचिव प्रो सुमन शर्मा ने कहा

कि 3 दिवसीय प्रतियोगिता का सबसे बेहतर अनुभव यह है कि प्रत्येक वर्ग से शीर्ष के 8 खिलाड़ियों को खेलों इंडिया में अपनी प्रतिभा का आए बढ़ते हुए एशियन गेम्स व ओलंपिक्स जैसे स्तर तक खिलाड़ियों के चयन की यात्रा रहेगी। 7 से 9 फरवरी तक चली इस चैंपियशिप में 87 प्लस किलोग्राम भार वर्ग में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की मुस्कान सिंह, 87 किलोग्राम भार वर्ग में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की तमन्ना, 81 किलोग्राम भार वर्ग में पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला की हीना, 76 किलोग्राम भार वर्ग में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ की जीवन लता, 71 किलोग्राम भार वर्ग में शिवाजी विश्वविद्यालय की प्राजक्ता सालुंखे, 64 किलोग्राम भार वर्ग में आंध्र विश्वविद्यालय वी.एस.के.पी की एस. पल्लवी, 59 किलोग्राम भार वर्ग में चंडीगढ़ विश्वविद्यालय की उषा, 55 किलोग्राम भार वर्ग में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला की रमनदीप कौर, 49 किलोग्राम भार वर्ग में शिवाजी विश्वविद्यालय की अराती तातगुंती, 45 किलोग्राम भार वर्ग में एस.पी.पी.यू. की गरुड़ हर्षदा ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वहीं 87 प्लस किलोग्राम भार वर्ग में चंडीगढ़ विश्वविद्यालय की धोरे रुचिका, 87 किलोग्राम भार वर्ग में चंडीगढ़ विश्वविद्यालय की शिवानी यादव, 81 किलोग्राम भार वर्ग में आंध्र विश्वविद्यालय वी.एस.के.पी की सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय की माने तृप्ति, 71 किलोग्राम भार वर्ग में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ की दीक्षा शर्मा, 64 किलोग्राम भार वर्ग में एम.जी.के.वी.पी. वाराणसी की ज्योति यादव, 59 किलोग्राम भार वर्ग में योगी वामन कडोपा विश्वविद्यालय की लिज़ा कामशा, 55 किलोग्राम भार वर्ग में केआईआईटी विश्वविद्यालय की स्नेहा सोरेन, 49 किलोग्राम भार वर्ग में मुंबई विश्वविद्यालय की दलवी सौम्या सुनील, 45 किलोग्राम भार वर्ग में शिवाजी विश्वविद्यालय की अपेक्षा धोने ने रजत पदक प्राप्त किया। 87 प्लस किलोग्राम भार वर्ग में एल.पी.यू. की रवनीत कौर, 87 किलोग्राम भार वर्ग में जी.एन.डी.यू. अमृतसर की अंजलि जोशी, 81 किलोग्राम भार वर्ग में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की रेशमा, 76 किलोग्राम भार वर्ग में मैंगलोर विश्वविद्यालय की यशविनी बंदारी, 71 किलोग्राम भार वर्ग में मैंगलोर विश्वविद्यालय की थनुषा एम., 64 किलोग्राम भार वर्ग में एच.वाई.वी. दुर्ग सी.जी. की सोनाली यादव, 59 किलोग्राम भार वर्ग में जी.के. विश्वविद्यालय की बालो यालम, 55 किलोग्राम भार वर्ग में कालीकट विश्वविद्यालय की मनिकम शेतिग. एन, 49 किलोग्राम भार वर्ग में मैंगलोर विश्वविद्यालय की लक्ष्मी बी., 45 किलोग्राम भार वर्ग में ए.एन.यू. की बी. राजेश्वरी ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

उत्कृष्ट शोध-पत्र के लिए सीयू के कश्मीर अध्ययन केंद्र के शोधार्थी प्रवीन सम्मानित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कश्मीर अध्ययन केंद्र से शोधार्थी प्रवीन कुमार को उनके उत्कृष्ट शोध पत्र के लिए मध्यप्रदेश जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी ने सम्मानित किया है । प्रवीन कुमार के शोध-पत्र 'कश्मीर में साधु-संन्यासी' को विशेषज्ञ-समिति ने उत्कृष्ट मानते हुए 11 हजार रुपये के पुरस्कार और पंचतत्व की थीम पर आधारित विशिष्ट स्मृति चिन्ह के लिए अनुशंसित किया ।

शोधार्थी प्रवीन कुमार ने यह शोध आलेख 27-29 जनवरी 2024 को भोपाल में आयोजित ' सांस्कृतिक परंपरा में साधु और संन्यासी' विषयक संगोष्ठी में प्रस्तुत किया । यह शोध-आलेख कश्मीर की संत लल्लदेय के जीवन, उपदेशों तथा आध्यात्मिक मार्ग पर विशेष रूप केन्द्रित था । भारतीय संस्कृति में साधु और सन्यासियों की परंपरा से संबंधित अपने आप में यह एक विशिष्ट विषय रहा तथा यह संगोष्ठी इस तरह के महत्वपूर्ण

विषय पर अकादमिक स्तर से शोध अध्ययनों व संगोष्ठियों के आयोजन की दिशा में प्रेरित करती है । हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सत प्रकाश बंसल, डीन अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, कश्मीर अध्ययन केंद्र की निदेशक प्रो. आभा चौहान, प्रवीन कुमार के शोध-पर्यवेक्षक प्रो. मलकीत सिंह एवं कश्मीर अध्ययन केंद्र के सभी संकाय सदस्यों ने प्रवीन को उनकी इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं प्रदान की हैं।

स्वयंसेवकों को नि:स्वार्थ भाव से समाज में योगदान देने के लिए किया प्रोत्साहित

सीयू के देहरा परिसर में एनएसएस इकाई की ओर से शिविर का शुभारंभ

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के सप्त सिंधु परिसर देहरा की एनएसएस इकाई- I की ओर से "विकसित युवा से विकसित भारत" के शीर्षक के अंतर्गत सात दिवस शिविर का शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के मुख्य अथिति देहरा परिसर निर्देशक प्रो नारायण सिंह राव और विशिष्ट अतिथि डॉ मलकीयत सिंह रहे। कार्यक्रम के आरंभ में कार्यक्रम अधिकारी, डॉ श्रेया बख्शी ने अतिथियों का स्वागत किया एवं उन्होंने शिविर के शीर्षक की चर्चा करते हुए कहा कि विकसित युवाओं से ही भारत को विकसित किया जा सकता है। उन्होंने सभी के समक्ष सात दिवसीय शिविर की पृष्ठभूमि रखी और साथ ही इन दिनों होने वाली गतिविधियों से सब को अवगत कराया और गत वर्ष में हुई विभिन्न समाजसेवी गतिविधियों को दर्शाया। इसके उपरांत डॉ मलकीत सिंह के उद्बोधन में उन्होंने स्वयं सेवकों को निस्वार्थ भाव से समाज में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया और व्यक्तिगत व्यक्तिव को उभारने की प्रेरणा दी एवं सभी का उत्साह बढ़ाया।

इसके उपरांत प्रो नारायण सिंह राव ने भारत की संस्कृति के बारे में हमें अवगत कराया एवं भारत के विश्व गुरु होने की बात पर बल दिया उन्होंने हमारे समाज में महिलाओं की अदभुत भूमिका पर भी प्रकाश डाला और अपने शब्दों से NSS स्वयं सेवकों का मार्गदर्शन किया। इसके पश्चात् स्वयं सेवी लक्ष्मी जिनिया ने धन्यवाद प्रस्ताव सबके समक्ष रखा। अंत में वंदेमातरम का गायन किया गया और साथ में भोजन अंतराल के पश्चात् सत्र का समापन हुआ। सत्र का संचालन कीर्ति शर्मा ने किया। सत्र II, में कार्यक्रम अधिकारी, डॉ श्रेया बख्शी ने स्वयं सेवकों का परिचय कुछ खेलों के माध्यम से लिया और स्वयं सेवकों को छः समूहों में विभाजित किया। फिर समूहों को सप्त सिंधु क्षेत्र में प्रवाहित सात नदियों का नाम दिया गया।जिसमें स्वयं सेवकों ने बढ़-चढ़ कर अपनी भागीदारी दर्ज़ कराई और इसी के साथ इस सत्र का समापन हुआ।

सीयू के अश्विनी और अनुभव ने चित्र भारती फिल्म फेस्टिवल में प्राप्त किया प्रथम पुरस्कार

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने अश्विनी को बेस्ट डॉक्यूमेंट्री अवार्ड से नवाज़ा

धर्मशाला। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के नव-मीडिया विभाग के छात्र अश्विनी रंजन और अनुभव कुमार दूबे की ओर से बनाई गई डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म 'Next Stop Folk Music' को कैंपस प्रोफेशनल कैटेगरी में बेस्ट डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'भारतीय चित्र साधना' की ओर से 23 से 25 फरवरी 2024 को 'चित्र भारती फिल्म फेस्टिवल' (CBFF) का 5वां संस्करण पंचकुला, हरियाणा में आयोजित किया गया। अश्विनी रंजन को यह पुरस्कार केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर और स्टेट हायर एजूकेशन काउन्सिल, हरियाणा के चेयरमैन प्रो. बी.के. कुठियाला ने प्रदान किया। इस फिल्म फेस्टिवल में देश के सिनेमा जगत के विवेक अग्निहोत्री, दलेर मेहंदी, अमिताभ वर्मा, ईशा गुप्ता सहित तमाम दिग्गज सहित सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर भी शामिल हुए।

तीन दिनों तक चलने वाले इस फिल्म महोत्सव में 19 राज्यों की 25 भाषाओं में बनी 133 फिल्में प्रदर्शित की गई।केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के नव-मीडिया विभाग के छात्र अश्विनी रंजन और अनुभव कुमार दूबे के अनुसार फिल्म 'Next stop Folk Music' लोक संगीत पर आधारित एक फिल्म है जिसमें भारत के तीन अलग – अलग राज्यों (राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और बिहार) की संस्कृतियों में लोक संगीत का स्थान और स्तर को दिखाया गया है। फिल्म में इन राज्यों के अलग-अलग भाषाओं के लोक संगीत में समानता और विभिन्न पारिवारिक और सांस्कृतिक अवसरों पर संगीत में एकात्मता को भी चित्रित किया गया है। इस फिल्म में सहायक निर्देशक की भूमिका नव मीडिया विभाग की छात्रा काजल कपूर और अनुभूति मेहता ने निभाई है। यह पुरस्कार प्रदान करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि यह बड़े हर्ष का विषय है कि जिस यूनिवर्सिटी को बनाने के लिए वो पिछले 11 साल से लड़ाई लड़ रहे हैं वहां के विद्यार्थी को पुरस्कार देते हुए मुझे आनंद की अनुभूति हो रही है। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का अपना नया कैंपस बहुत जल्द ही बनकर तैयार हो जाएगा। वहीं केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एस.पी. बंसल ने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए हर्ष एवं गौरव की बात है, उन्होंने नव मीडिया विभाग को बधाई देते हुए कहा कि सिनेमा केवल मनोरंजन के लिए नहीं है,बल्कि अपनी कला एवं संस्कृति के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए भी है। ये सफलताएं सिर्फ फिल्मों की सफलताएं नहीं हैं, बल्कि भारतीय प्रतिभा और कौशल की भी सफलताएं हैं और यही सफलताएँ भविष्य में भारत को Content Hub of the World बनाने में सहायक होंगी।

शोधार्थी विक्रम उत्कृष्ट शोध पत्र के लिए सम्मानित

शिक्षा विभाग में प्रो. मनोज सक्सेना के निर्देशन में कर रहे हैं पीएच.डी

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के शोद्यार्थी विक्रम बजोत्रा को उत्कृष्ट शोध पत्र के लिए प्रमाणपत्र मिला है। 56th एनुअल नेशनल कांफ्रेंस ऑफ़ आई. ए. टी. ई. और प्रो. राम तकावले रिसर्च सेंटर एवं स्कूल ऑफ़ एजुकेशन यशवंतराव चव्हान महाराष्ट्र ओपन यूनिवर्सिटी, नासिक, महाराष्ट्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'इंडियन नॉलेज सिस्टम: टीचर, टीचिंग एंड लर्निंग' शीर्षक आधारित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी में उन्हें यह सम्मान मिला है । मूलतः जम्मू के रहने वाले विक्रम विगत तीन साल से केंद्रीय विश्वविद्यालय के शोधार्थी हैं और शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार सक्सेना के निर्देशन में" उच्च शिक्षा स्तर पर आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के एकीकरण का एक महत्वपूर्ण अध्ययन: उपयोग, नैतिक जागरुकता और सीखने के परिणामों का आकलन " विषय पर शोध कार्य कर रहे हैं। तीन बार नेट और एक बार जेआरएफ पास शोधार्थी विक्रम बजोत्रा के अनुसार उत्कृष्ट शोध पत्र का विषय " ICT as a game changing toolset for 21st century integration and accessibility of Indian Knowledge system" रहा। यह शोध पत्र उन्होंने प्रो. मनोज कुमार सक्सेना के दिशा-निर्देशन में तैयार किया था। इन्होंने अपने शोध पत्र के मुख्य बिन्दुओं में भारतीय ज्ञान परम्परा में किस तरह से आई. सी. टी. के माध्यम से सामाजिक अवस्थितियों की मुख्य धारा में नवीन प्रयास किया जा सकता है, प्रमुख रहा। इससे पहले विक्रम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय एवं अवस्थी कालेज दाड़ी, धर्मशाला में अपने शोध पत्र प्रस्तुत कर चुके हैं। उनकी इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप और अधिष्ठाता शिक्षा स्कूल प्रो. मनोज कुमार सक्सेना ने शुभकामनाएं दीं हैं और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

केंद्रीय विवि के 43 छात्रों ने नेट और 12 ने जेआरएफ की परीक्षा की उत्तीर्ण

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में दिसंबर 2023 माह में ली गई यूजीसी-सीएसआईआर की ओर से आयोजित नेट/जेआरएफ की परीक्षा में इस बार 43 विद्यार्थियों ने नेट की परीक्षा पास की है, इसमें जेआरएफ की परीक्षा पास करने में 12 विद्यार्थी सफल रहे हैं। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार तथा अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील कुमार ने प्रसन्नता व्यक्त की है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।इस बार गणित विभाग से शुभम जसरोटिया, कात्यायनी, श्रुति नरयाल, अखिल ने जेआरएफ, कनिका, पल्लवी ठाकुर ने नेट, राजनीति विज्ञान विभाग से अभि और सुनील कुमार ने जेआरएफ, नितीश कुमार, रोशनी देवी, स्मृति, अंकित कौंडल, ललिता देवी, शशी कुमार, रंजन कुमार, अनूप कुमार, बाबू राम, रविंद्र सिंह ने नेट, इतिहास विभाग से शैषवी शर्मा ने जेआरएफ, डोली शर्मा, सुमित कुमार ने नेट, रसायनशास्त्र विभाग से शिवानी ने नेट, पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन विभाग से मेघा ने नेट, जंतु विज्ञान विभाग से स्नेहा ठाकुर, जागृति ठाकुर ने जेआरएफ, कनुप्रिया, अंशुता शर्मा, आकाश राठौड़ ने नेट, दृश्य कला विभाग से सार्थक वार्ष्णेय ने नेट, पादप विज्ञान विभाग से प्रिया शर्मा ने जेआरएफ, अर्थशास्त्र विभाग से प्रतीक शर्मा ने नेट, भौतिकी एवं खगोल विज्ञान विभाग से अक्षय कुमार, श्वेता कुमारी ने नेट, अजय कुमार ने जेआरएफ,अंग्रेजी विभाग से आदित्य ठाकुर ने जेआरएफ, नर्गिस खानम, मोहित डोगरा, जितेंद्र ठाकुर, विपाशा बिष्ट, रिगज़िन ठाकुर, स्वास्तिक शर्मा, आशीष अग्रवाल ने नेट और हिंदी विभाग से हर्ष भारद्वाज ने नेट की परीक्षा पास की है। कुलपति ने सभी को बधाई दी है।

सीयू के विद्यार्थियों को मिली अपनी बस सुविधा

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने चार बसों को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने वीरवार को विश्वविद्यालय की अपनी चार बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा सहित अन्य विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य मौजूद रहे। ज्ञान ज्योति, धवलधार, शक्तिरुपा और वीरधरा नाम से चलाई गईं इन बसों से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को आवाजाही में काफी सहुलियत मिलेगी। इन बसों से विद्यार्थियों की धर्मशाला कैंपस से बाया सकोह शाहपुर कैंपस, छात्रावास से वाया कचहरी-मटौर बाईपास गगल से शाहपुर कैंपस, पुरुष छात्रावास से वाया कचहरी-मटौर बाईपास गगल से धर्मशाला कैंपस और शाहपुर कैंपस से द्रम्मण-गगल-धर्मशाला कैंपस तक आवाजाही रहती है। इस मौके पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि अभी तक विश्वविद्यालय प्रदेश पथ परिवहन निगम की सेवाएं लेता आ रहा था, लेकिन अब विश्वविद्यालय ने अपनी चार बसें ले लीं हैं। विद्यार्थियों को पढ़ाई के दौरान किसी तरह की समस्या न आए इसके लिए विश्वविद्यालय हमेशा प्रयासरत रहता है।

सीयू की छात्राएं कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी पद पर चयनित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शाहपुर परिसर में चल रहे पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान स्कूल की दो छात्राओं का चयन राज्य सरकार में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में बतौर कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर हुआ है। इनमें से एक शोधार्थी सोनिया कुमारी हैं और दूसरी बैच 2014-16 की छात्रा शबनम हैं। केंद्रीय विवि के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार ने दोनों छात्राओं को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। वहीं विभागाध्यक्ष प्रो. अंबरीश महाजन, डॉ दीपक पंत, डॉ दिलबाग, डॉ चिन्मय, डॉ आलोक सहित अन्य संकाय सदस्यों ने दोनों छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर और सीयू के मध्य एमओयू हस्ताक्षरित

अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियाँ होंगी साझा

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर-(म.प्र.) अब अनुसंधान, शैक्षणिक, विस्तार गतिविधियों और कौशल विकास के क्षेत्रों में सहयोग और संसाधनों को साझा करेंगे। इसी संबंध में बुधवार को कुलपति सचिवालय में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस मौके पर केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, केंद्रीय विवि के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील मौजूद रहे।

समझौता ज्ञापन के अनुसार विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान और शिक्षा, परियोजनाओं और कार्यक्रमों की सुविधा रहेगी। वहीं छात्रों और संकाय विकास, संकायों, अनुसंधान विद्वानों और पीजी छात्रों का आदान-प्रदान, ज्ञान और अकादमिक अनुसंधान संसाधनों को साझा करना और संश्लेषण के लिए सहयोग रहेगा।

समझौता ज्ञापन की समयावधि के दौरान शोध के परिणामों को संयुक्त रूप से पेटेंट कराया जाएगा और पेटेंट के लाभ समान रूप से साझा किए जाएंगे। समझौता ज्ञापन के अनुसार विज्ञान और प्रौद्योगिकी या मानविकी के विभिन्न क्षेत्रों में संसाधन-साझाकरण और ज्ञान-साझाकरण वातावरण में सहक्रियात्मक सहयोग विकसित करना रहेगा। इसके साथ ही शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यक्रम विकसित करना और कार्यक्रमों के संयुक्त आयोजन, छात्रों के संयुक्त मार्गदर्शन, संकाय और छात्रों के आदान-प्रदान और इंटर्नशिप आदि के माध्यम से प्रशिक्षण और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में विशेषज्ञता साझा भी किया जाएगा। इसके साथ ही आंतरिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषण के लिए अनुसंधान कार्यक्रम विकसित करना रहेगा। इसके साथ ही दोनों विश्वविद्यालय मधुमक्खी पालन, मत्स्यपालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती और पर्यटन के क्षेत्रों से संबंधित कौशल आधारित पाठ्यक्रमों को शुरू करने में सहयोग करेंगे। इस मौके पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि डीएचएसजीवी ने स्किल हब और कम्युनिटी कॉलेज विकसित किया है और उभरते क्षेत्रों में छात्रों को कौशल विकसित करने के लिए एनएसक्यूएफ के तहत काम कर रहा है। डीएचएसजीवी और हिप्रकेवि दोनों अपने कौशल हब केंद्र या किसी अन्य कौशल वृद्धि कार्यक्रम के माध्यम से प्रमाणपत्र, डिप्लोमा आदि पाठ्यक्रमों के डिजाइन के द्वारा नए कौशल के विकास के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करेंगे। दोनों पक्ष ज्ञान और संसाधनों के पारस्परिक आदान-प्रदान के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को डिजाइन करेंगे। डीएचएसजीवी और हिप्रकेवि नियमित रूप से छात्रों और शिक्षकों के आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास में विशेषज्ञता साझा करेंगे। दोनों पक्ष पारस्परिक रूप से कौशल विकास, मूल्य संवर्धन, आउटरीच कार्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा, प्रमाणपत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि विकसित करेंगे।

Editorial team for University News Letter "Dhauladhar Sandesh"

Chief Patron	**Prof. Sat Prakash Bansal, Honb'le Vice Chancellor**
Patron	Prof. Pradeep Kumar, Dean Academics
Co-Patron	Prof. Suman Sharma, Registrar

Editor-in-Chief:	Prof. Aditya Kant, Eminent Professor, Department of Journalism and Mass Communication
Editor:	Dr. Ram Pravesh Rai, Dean, SoJMC&NM & Director Public Relations
Deputy Editor:	Shri Deepak Vaishnav, Assistant Professor, Department of New Media & Assistant Director Public Relations

Editorial Board

Language Editor (Hindi)	Prof. Chandra Kant Singh, Professor, Department of Hindi	**Language Editor (Other)**	Dr. Naresh, Assistant Professor, Department of Punjabi, Dr. Vivek Sharma, Assistant Professor, Department of Sanskrit
Language Editor (English)	Dr. Hemraj Bansal, Associate Professor, Department of English		
In charge News	Dr. Pooja Avasthi, PRO, Prof. Roshan Lal Sharma, Campus Director, Dhauladhar Parisar –I OR Nominee, Prof. Ashish Nag, Campus Director, Dhauladhar Parisar –II, Prof. Bhag Chand Chauhan, Campus Director, Shahpur Parisar, Prof. Narayan Singh Rao, Campus Director, Sapt Sindhu Parisar Dehra-I, Prof. Nirupama Singh, Campus Director, Sapt Sindhu Parisar Dehra-II, News Placement Shri Sanjay Kumar Singh, Assistant Director Official Language, News Typing Shri Sumit Sharma, Hindi Typist, Rajbhasha Anubhag		
News reporters	Shri Pawan Sharma, RD, Journalism and Mass Communication, Shri Shivam Sharma, RD, New Media, Shri Krishna Kharwar, RD, New Media, Shri Sarvesh Kumar Mishra, RD, New Media, Ms. Komal Vekta, RD, Journalism and Mass communication, Ms. Apoorva Shrivastava, RD, New Media, Shri Amit Yadav, RD, New Media		

Disclaimer: Articles carried in the News Letter are only for the purpose of information and should not be treated as a legal document